RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 4 अंक 11 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका दिसंबर 2021

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय ट्रांसफर क्यों ?

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

मेवाड़ी जयवर्द्धन

टाक सोनोग्राफी एण्ड लेब

विश्वास.. बेहतर जांच का

एक ही छत के नीचे सभी प्रकार की जांच की सुविधा

● सोनोग्राफी ● 3डी, 4डी, कलर डॉप्लर ● हिमेटोलॉजी ● क्लिनिकल पैथोलोजी ● स्पाइरोमेट्री
● हार्मोन एनालाईसिस ● बायोप्सी, कल्चर ● ई.सी.जी. TMT ● डिजिटल एक्सरे ● 2 डी ईको

नगर परिषद कॉम्पलेक्स, आर.के. हॉस्पीटल के सामने, कांकरोली, जिला-राजसमंद
Mob. 8104802345, 9649495678, Email : taksonolab@gmail.com

टाक लेब
गांधी सेवा सदन स्कूल के सामने,
बैंक ऑफ इण्डिया के पास, राजसमंद 313324

आस्था लेब
4 नगर परिषद कॉम्पलेक्स, आर.के. हॉस्पीटल के
सामने राजसमंद मो. 935213712

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

मेवाड़ी जयवर्द्धन

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

CARE LIFE

राजसमंद का सबसे बड़ा व अत्याधुनिक सुविधायुक्त फिजियोथेरेपी क्लिनिक

केयर लाईफ फिजियोथेरेपी क्लिनिक, नाथद्वारा

राजसमंद का प्रथम व एकमात्र लेजर थेरेपी फिजियोथेरेपी क्लिनिक

डॉ. राजेश जे बागोरा
[MPT, Ortho & SPORTS
MPT, MIAP, SCMT
(SPINE), MTFI, CMS & ED

परामर्श
- कन्धे का दर्द
- गर्दन दर्द
- कमर दर्द
- साइटीका
- स्लीप डिस्क
- जोड़ों का दर्द
- लकवा
- सुन्नपन व झनझनाहट
- श्वास की तकलीफ
- लिगामेंट इन्जुरी
- मांसपेशियों का खिंचाव
- डाईट प्लान
- योगा
- वजन घटाना इत्यादि

कृपया पहले समय लेकर पधारें।
मो. 98295-61644, 8829966222

1, विनायक विहार, पुलिस थाने के पीछे, नाथद्वारा www.carelifephysio.com

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सम्पादकीय

विकास का अजीबोगरीब पहलू

हाथ में आया मुंह न लगाया वाली कहावत को सबसे ज्यादा राजसमंद जिला मुख्यालय ने झेला है। योजनाओं, सुविधाओं एवं घोषणाओं की एक लंबी फेहरिस्त है, जिसमें जिला मुख्यालय को प्राथमिकता दिए जाने के प्रावधानों के बावजूद उनके शिलान्यास व शुभारम्भ समीपवर्ती नाथद्वारा में हो जाते हैं । राजनीतिक प्रभाव के इस प्रयोग में अमूमन आज तक ये होता रहा कि योजना जिला मुख्यालय पर साकार हो ही नहीं पाती थी, परन्तु इस बार विकास की इन अवधारणाओं में एक अजीबोगरीब पहलू देखने को मिल रहा है । इस बार एक ऐसी व्यवस्था जो जिला मुख्यालय पर सालों से संचालित हो रही थी एवं यही पर इसको वृहद करने की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, परन्तु अब उस पशु चिकित्सालय को कह दिया गया है कि चलो नाथद्वारा चलते हैं। तो अब तक प्रस्तावित योजनाओं से जिला मुख्यालय को वंचित रखने की परंपरा थी, अब उसमें यहां चल रही सुविधाओं के तबादले होने का नवाचार जुड़ गया है । इस पशु चिकित्सालय के नाथद्वारा तबादले की खबरों के सार्वजनिक होने के साथ चर्चाओं का बाजार गर्म है, जिसमें कुछ लोग अवश्य चिंतित नजर आते हैं। अन्यथा बड़ा वर्ग अपनी अपनी सहूलियत के तर्क गढ़ने की कोशिश में दिखाई दे रहा है । इसी चर्चा के गरमागरम बाजार के गलियारों से जो प्रश्न खड़े होते हैं, वो पूछते है कि जिला मुख्यालय के जनप्रतिनिधियों की ऐसी क्या मजबूरी कि अपने जायज हक की लड़ाई भी नही लड़ पा रहे हैं।

सत्ता के खिलाफ जनाक्रोश के दावे करने वाली राजसमन्द विधायक अपने क्षेत्र के साथ हो रहे इस भेदभाव के खिलाफ आक्रोशित नजर क्यों नहीं आ रही है ? जिला मुख्यालय के प्रधान, सभापति व अन्य जनप्रतिनिधियों ने इसका विरोध क्यों नही किया ? राजसमन्द सांसद को भी यह स्पष्ट करना चाहिए की व्यवस्थाओं के तबादले की इस परिपाटी पर वो किस तरफ खड़ी है? राजस्थान के विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी साहब से भी ये उम्मीद रहती है कि वो संरक्षक की भूमिका निभाते हुए जिला मुख्यालय पर संचालित योजनाओं को पोषित करते हुए पूरे जिलेभर में नवीन सम्भावनाओं को साकार करें।

जनता से भी यही आग्रह है कि राजनीतिक बिसातो पर अपने पाले भले ही तय करें, मगर इन पालो के दबाव में अपने जायज हितों को बलि न चढ़ाएं। आखिर में **जयवर्द्धन की पूरी टीम को बधाई** देता हूं कि जिस दौर में मीडिया महज खबर दिखानेभर को अपनी जिम्मेदारी समझ रहा है, वहां आपने पशु चिकित्सालय के इस मुद्दे के प्रत्येक पहलू पर बड़ी बेबाकी से भूमिका निभाई है।

हेमेन्द्रसिंह
कवि एवं साहित्यकार
राजसमंद, मो. 70103-09188

इस अंक में खास

1. **कवर स्टोरी 1 :** पर्यटन हब बन रहा राजसमंद, अब बदल रही तस्वीर पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** विश्वसनीयता, वैधता, पारदर्शिता के मायने पेज - 6
3. **कवर स्टोरी 3 :** राजसमंद से नहीं छीनने देंगे पशु चिकित्सालय : दीप्ति पेज- 8
4. **राजसमंद आज कल और कल** पेज- 10
5. **धर्म संस्कृति :** अयोध्याजी ! पेज - 11
6. **व्यंग्य :** भक्त की अभिलाषा पेज - 12
7. **कहानी :** तुम्हारे बिना अधूरा हूं मैं पेज - 14
8. **तीखी मिर्ची :** गधा नहीं बैल पालना चाहिए पेज - 16
9. **मेरा गांव मेरे लोग :** माजी महाराज सौन्दर्यवतीजी पेज - 18
10. **संस्मरण :** धामिणी पेज - 19
11. **राइजिंग अवेयरनेस** पेज - 20
12. **पुस्तक समीक्षा :** मुरलीधर कनेरिया के सुलगते सवाल पेज- 24
13. **व्यंग्य :** परियों की रानी की डोली पेज - 25
14. **अध्यात्म :** कौनसा धर्म श्रेष्ठ ? पेज - 31
15. **टेक्नीकल विंडो :** ग्रीन पटाखे पेज - 32
16. **मेवाड़ी चौपाल** पेज - 34

कवर स्टोरी

राजसमंद जिला मुख्यालय से बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय अब नाथद्वारा ट्रांसफर

आखिर राजसमंद से क्यों छीना जा रहा पशु चिकित्सालय ?

राजसमंद जिला मुख्यालय पर करीब आठ वर्ष पहले शुरू हुआ बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय अब नाथद्वारा स्थानान्तरित करने के आदेश जारी कर दिए हैं। अभी यह चिकित्सालय किशोरनगर स्थित पशुपालन विभाग परिसर में ही संचालित हो रहा है, जहां आमजन को सुलभ सुविधा भी मिल रही थी। अब अचानक पशुपालन विभाग द्वारा बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय को नाथद्वारा स्थानान्तरित किया जा रहा है। इससे न सिर्फ राजनीतिक खींचतान भी खुलकर सामने आ गई, बल्कि जिला स्तरीय सुविधाओं को छीन कर नाथद्वारा शिफ्ट करने की मनमानी भी सिद्ध हो रही है। नाथद्वारा में पशु चिकित्सा के लिहाज से बहुउद्देशीय चिकित्सालय की जरूरत हो सकती है, लेकिन राजसमंद जिला मुख्यालय से नाथद्वारा शिफ्ट करना कहां तक उचित है। इसके लिए नाथद्वारा में नया बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय क्यों नहीं खोल दिया जाता? कुछ इसी तरह के सवालों को लेकर राजसमंद की जनता मुखर होने लगी और बहुउ्देशीय पशु चिकित्सालय नाथद्वारा स्थानान्तरित करने पर उग्र आंदोलन का ऐलान कर दिया है।

जानकारी के अनुसार राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2010 में राजसमंद में बहुउ्देशीय पशु चिकित्सालय खोला गया। उसके बाद डॉ. घनश्याम मुरोड़िया द्वारा बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय में मवेशियों का उपचार किया गया। एक्सरे मशीन भी आई, जिसका भी डॉ. मुरोड़िया ने संचालन करते हुए उपयोग किया। खास बात यह है कि लंबे समय तक इस अस्पताल में सरकार द्वारा चिकित्सकों की नियुक्ति ही नहीं हुई, लेकिन डॉ. मुरोड़िया ने सेवानिवृत होने तक लगातार अस्पताल में सेवाएं दी और उसके बाद दूसरे चिकित्सक को चार्ज दिया गया। इस तरह राजसमंद शहर के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के मवेशियों को भी करीब सात आठ वर्षों से सुलभ चिकित्सा सुविधा मिल रही थी। इस बीच राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2014 में

कई जिला स्तरीय दफ्तर नाथद्वारा में

डाइट, पहला कन्या कॉलेज महाविद्यालय राजसमंद की बजाय नाथद्वारा में खोले गए। एसबीआई का प्रशिक्षण केंद्र भी राजसमंद की बजाय नाथद्वारा में है। हाट बाजार लालबाग में खोला गया, जबकि जिला चिकित्सालय से ज्यादा बैड नाथद्वारा अस्पताल में स्वीकृत किए गए। भूजल का प्रोजेक्ट भी सिर्फ नाथद्वारा विधानसभा क्षेत्र के लिए लागू किया गया। इसी तरह कोरोना की दूसरी लहर के दौरान राजसमंद जिला मुख्यालय पर लगने वाली कोरोना जांच लेब को भी नाथद्वारा में शिफ्ट कर दिया गया। इस तरह राजसमंद जिला मुख्यालय के कई दफ्तर नाथद्वारा उपखंड स्तर पर खोल दिए गए।

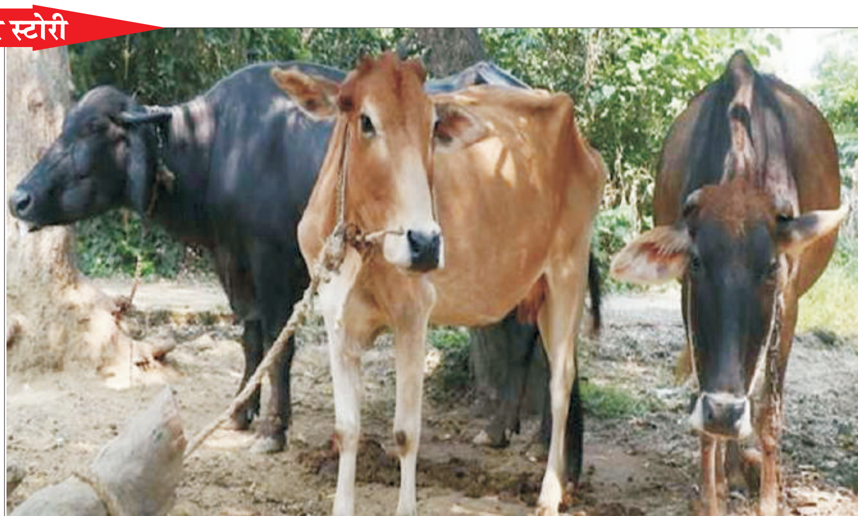

बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय के नए भवन के लिए बजट भी स्वीकृत हो गया और जिला कलक्टर द्वारा गणेशनगर, जावद में जमीन भी आवंटित की गई, लेकिन न तो पशुपालन विभाग अतिक्रमण हटा पाया और न ही भवन का निर्माण हो पाया। इस कारण बजट अब भी पशुपालन विभाग के खाते में पड़ा हुआ है और बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय का संचालन मात्र एक कक्ष में हो रहा है, लेकिन नए भवन को लेकर पशुपालन विभाग द्वारा कोई ठोस प्रयास नहीं हो पाए। फिर भी बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय पुराने भवन में ही किशोरनगर में संचालित हो रहा है। यहां न सिर्फ गाय-भैंस, भेड़, बकरी व अन्य मवेशियों का उपचार कर रहे हैं, बल्कि जंगली जानवरों के उपचार के लिए भी राजसमंद में सुलभ पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो रही थी। अब पशुपालन विभाग द्वारा राजसमंद जिला मुख्यालय से बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय को नाथद्वारा शिफ्ट किया जा रहा है, जिससे न सिर्फ जिला मुख्यालय व आस पास के क्षेत्र के पशुपालकों को परेशानी होगी, बल्कि भविष्य में राजसमंद में बहुउद्देशीय सुविधा मिलने की संभावना भी खत्म हो जाएगी। इस अस्पताल में चिकित्सक, कम्पाउंडर सहित 24 कार्मिकों के पद है, लेकिन अभी दो डॉक्टर सहित 5 का स्टाफ कार्यरत है। ऐसे में यह स्टाफ नाथद्वारा चला जाएगा और राजसमंद में मात्र एक चिकित्सक के भरोसे पशु चिकित्सा व्यवस्था रह जाएगी।

मेडिकल कॉलेज भी नाथद्वारा खींच रहे

राजसमंद जिला मुख्यालय पर आरके जिला अस्पताल के पास पर्याप्त जमीन होने के बावजूद मेडिकल कॉलेज नाथद्वारा की तरफ ले जाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रशासन द्वारा पहले गुंजोल में जमीन देखी गई। उसके बाद अब मजा नांदोड़ा के पास जमीन चिह्नित की गई है। हालांकि कांग्रेस नेताओं द्वारा मेडिकल कॉलेज राजसमंद में खोलने की बात कही जा रही है, लेकिन यह अब भविष्य के गर्त में निर्णय है।

आखिर राजसमंद की उपेक्षा क्यों ?

आखिर राजसमंद जिला मुख्यालय के दफ्तर व सुविधाएं नाथद्वारा शिफ्ट करने के पीछे शासन, प्रशासन की क्या मंशा है, यह बड़ा सवाल खड़ा हो रहा है। नाथद्वारा विधायक व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी मेवाड़ के कद्दावर नेता है जो अपने क्षेत्र में सुविधाएं बढ़ाना चाहते हैं। चर्चा है कि इसलिए उनका राजसमंद से लगाव नहीं है। चर्चा यह भी चल रही है कि प्रदेश में कांग्रेस की सरकार है और राजसमंद में भाजपा की विधायक है। इसलिए कांग्रेस द्वारा राजसमंद की बजाय नाथद्वारा को प्राथमिकता दी जा रही है।

फिर जनप्रतिनिधि क्यों बैठे हैं सुस्त

राजसमंद से पशु चिकित्सालय शिफ्ट करने के आदेश जारी हो गए, लेकिन अभी तक राजसमंद विधायक दीप्ति माहेश्वरी के साथ तमाम भाजपा व कांग्रेस के नेताओं ने भी चुप्पी साध ली है। इससे विधायक सहित अन्य समस्त जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं कि आखिर जनप्रतिनिधि अपनी आवाज बुलंद क्यों नहीं कर रहे हैं। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है।

खमनोर में भी हुआ था विरोध

खमनोर ब्लॉक मुख्यालय की सुविधाएं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दूसरी ग्राम पंचायत में खोलने का विरोध हुआ था। इसको लेकर कस्बे के लोग विरोध में उतर गए थे। अनशन पर बैठने के बाद प्रशासन ने अपना निर्णय बदला।

सरकार के निर्णय से ट्रांसफर

सरकार के आदेशानुसार राजसमंद जिला मुख्यालय का बहुउद्देशीय चिकित्सालय नाथद्वारा शिफ्ट हो रहा है और अभी नाथद्वारा में जो पशु औषधालय चल रहा है, उसे राजसमंद में स्थानान्तरित करने की कार्रवाई की जा रही है। जिला स्तर से कोई निर्णय नहीं हुआ है।

डॉ. अरोड़ा, उप निदेशक पशुपालन विभाग राजसमंद

करेंगे उग्र आंदोलन, भूख हड़ताल भी

राजसमंद से बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय को किसी भी सूरत में नाथद्वारा शिफ्ट नहीं होने दिया जाएगा। उग्र आंदोलन करेंगे। जरूरत पड़ने पर अनशन करेंगे, लेकिन किसी भी परिस्थिति में पशु चिकित्सालय को नाथद्वारा नहीं जाने दिया जाएगा। राजनीतिक द्वेषता के चलते ऐसी हरकत की जा रही है। क्योंकि पहले भी कई जिला स्तर की सुविधाएं व दफ्तर नाथद्वारा में खोल दिए गए।

बंशीलाल खटीक, पूर्व विधायक राजसमंद

विश्वसनीयता, वैधता, पारदर्शिता के मायने

स्वतंत्रता के बाद तथाकथित जनाकांक्षाधारित राजनीति और उसके प्रभा मंडल में उसी अंदाज में सोचने और अपनी दिशाएं तय करने वाली शासन प्रशासन की ढुलमुल व्यवस्थाओं ने कैसे जनता जनार्दन की अपेक्षाओं और सपनों को प्रथम लंबित और फिर यकायक खंडित किया है, के अनेक दृष्टांत देखने को मिलते हैं। विशेषकर ऐसे संवेदनशील क्षेत्र जहां अबोले प्राणियों की कल्याण कामना को लेकर हम जिम्मेदारों से बड़ी बड़ी अपेक्षा पाले होते हैं, वहां जब व्यवस्थाएं ही नहीं, क्षुद्र राजनीतिक सोच और निर्णय अपने डेने फैला विकास के सोच को ही खंड खंड कर देते हैं तो आमजन को कष्ट होना स्वाभाविक है।

कांकरोली से नाथद्वारा जाते हुए गणेशनगर से आगे गुजरे जमाने में जिला प्रशासन द्वारा शिक्षक सदन के लिए आवंटित भूमि पर वह भवन न बन पाने का दु:ख मौके पर ही खड़े होकर बयां होने की बातचीत के ही बीच यह ज्ञात हुआ कि उसी क्षेत्र में सुविधासम्पन्न पशु चिकित्सालय के भवन बनने की कल्पना भी साकार नहीं हो पाई और अतिक्रमण के चलते वह आवंटित भूमि ही हवा हवा हो गई। पशु चिकित्सालय के सुविधापूर्ण भवन और पशु चिकित्सकों व कार्मिकों की व्यवस्थाओं से पूर्ण मुख्यालय का नाथद्वारा शिफ्ट हो जाना और वहां के अपेक्षाकृत छोटे चिकित्सालय का राजसमंद शिफ्ट हो जाना स्वच्छ और सुशासन पर अनेक सवाल खड़े करता है।

ये मात्र दृष्टांत हैं लेकिन ऐसे उदाहरण यह सोचे जाने के लिए पर्याप्त कारण देते हैं कि जिसे हम विकास या विजन डेवलपमेंट कहते हैं, क्या हमारी अनदेखी, देखकर भी मुंह फेर लेने की विवशता, जिम्मेदार तंत्र द्वारा नीर क्षीर विवेकी निर्णय लेने के अभाव का परिणाम तो नहीं/ बहुत अच्छा हो कि बजाय निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए जन विकास के उक्त मुद्दों पर हम एमदी से मेमदी वाले निर्णयों को अंजाम दें, चाहिए यह कि पड़ौसी शहरों के मध्य विकास के किसी एकीकृत मॉडल का नियोजन किया जाए और एक टेबल पर एक या एकाधिक बस्तियों की आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए एक साथ बैठा जाए। विशेषकर दो समीपस्थ शहरों के लिए सिस्टर या ट्विन सिटीज वाली विचारधारा को सामने न रख यदि ऊपर वर्णित दृष्टांत को आकार दिया जाएगा तो यह विकास की सोच न होकर जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला कृत्य होगा। पारदर्शिता, वैधता और विश्वसनीयता के अभाव में असंतुलित शहरी विकास के दुष्परिणाम क्या होंगे, यह विचारणीय विषय है। जिला मुख्यालय से पशु चिकित्सालय का यह हश्र होना राजनयिकों, शासन और प्रशासन सहित अधीनस्थ कार्यकारी एजेंसियों के लिए अब आत्मावलोकन का विषय है।

पशु चिकित्सालय का मुद्दा विज़न और एक्ज़िक्यूशन की जवाबदेही, वैधता, विश्वसनीयता और पारदर्शिता के विषय का हनन तो है ही, यह नगरीय संरचनाओं के सुनियोजित विकास के अभाव और बंदरबांट के साथ संतुलित और अधिकारों के समान और सम्मानपूर्ण विभाजन न होने से उत्पन्न घोर असंतोष का विषय भी बनता है। सुनियोजित और संतुलित विकास किसी भी लोकतंत्रात्मक व्यवस्था की धुरि है।

असंतोषकारक जन मानस बनने के कारणों को खंगाला जाए तो स्पष्ट होता है कि उक्त प्रकार के निर्णयों को अंजाम देने वाला प्रबंधन प्रबंध तकनीकी के प्रयोग में सफल नहीं है। किसी विभाग पर सही नियंत्रण और मॉनिटरिंग मुख्यालय पर ही हो सकती है, अन्यत्र नहीं। उक्त शिफ्टिंग के दूरगामी परिणामों को प्रभावी मोनिटरिंग के चश्में से देखा जाना भी नितांत आवश्यक है। पशु चिकित्सा का उचित प्रबंधन मुख्यालय से ही प्रभावी ढंग से मोनिटर किया जा सकता है। अंतर्विभागीय समन्वय के लिए जिला मुख्यालय से बढ़कर बेहतर स्थान हो नहीं सकता। जन सुविधाएं प्रदान करने के लिए मुख्यालय से बढ़िया स्थान का कोई विकल्प नहीं। यह बात न समझ पाना आश्चर्यजनक है।

विडंबना यह है कि हमने जिला मुख्यालय को जन्म तो दे दिया, लेकिन उसके उचित लालन पालन के विषय में हम कभी गंभीर नहीं हुए हैं। शायद ऐसा तभी संभव हो सकेगा जब हम समन्वित, एकीकृत और अंतर्निर्भर विकास के सोच का मानस बना पाएंगे। फिलहाल तो अबोले पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य प्रबंधन का कोई न्यायपूर्ण मोड्यूल नज़र नहीं आता और न ही इस बात का जवाब कि एक के मुंह निवाला निकालकर दूसरे के मुंह में डालने के युक्तियुक्त कारण क्या हैं/ हां, जरूरी है अब ऐसी परिस्थितियों को ट्रेस, ट्रेक और ट्रीट करने की।

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ शिक्षाविद्
राजसमंद

आखिर हमारी विधायक का क्या है दायित्व : एडवोकेट पालीवाल

मेडिकल कॉलेज के आंदोलन से मैं जुड़ा रहा हूं, जिसे लॉकडाउन से पहले कुलदीप सिंह गौड़ द्वारा व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए आरंभ किया गया। भोली भाली जनता इससे जुड़ती गई, मीटिंग्स हुई, आंदोलन के खर्चे उठाने के लिए लोगों ने चंदा भी दिया, रैली भी निकाली गई। पर एक दिन... कौतूहलवश मैंने व्हाट्सएप ग्रुप में जुड़े लोगों के नाम/ नंबर देखना आरम्भ किए तो पाया कि तत्कालीन विधायक महोदया हरेक ग्रुप में खुद मौजूद थी। मुझे कुलदीप जी द्वारा सभी ग्रुप में न केवल जोड़ रखा था, अपितु एडमिन भी बना रखा था, तब मैंने हर ग्रुप में लिखा कि क्या विधायक महोदया मेडिकल कॉलेज के लिए संघर्ष कर रही, आम जनता का उसी प्रकार से नेतृत्व करेंगी, जिस प्रकार कांकरोली बस स्टैंड के मुद्दे पर किया था? फिर क्या था, मैडम चुपचाप सभी ग्रुप से बगैर जवाब दिए लेफ्ट हो गईं। जाहिर है कि उक्त आंदोलन उनकी शह पर हो रहा था, जबकि पिछली सरकार में वे उच्च शिक्षा मंत्री रह चुकी थी और राजसमंद को कुछ न दिला सकीं थी। वे राजनीति के हथकंडों में माहिर थी। ऐसा कई मौकों पर हमने देखा है।

दुर्भाग्यवश कुछ दिनों के आंदोलन के पश्चात लॉकडाउन पार्ट 1 लग गया और चुनावी माहौल में वे दिवंगत भी हो गई। वे बेहद ताकतवर नेता थी, पर उन्होंने अपने कद के मुताबिक राजसमंद के लिए कुछ भी न किया। उनकी ताकत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जोशी जी को उन्होंने अपने गृह क्षेत्र तक सीमित करके रख दिया था। उन्हें लगता था कि समस्याओं को जिंदा रखे जाने पर ही राजनीति की लंबी पारी खेली जा सकती है। प्रभु उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और हम जनता को भी ऐसी मूर्ख बने रहने दे और जोशी जी को कोसने की ताकत प्रदान करें।

नीलेश पालीवाल
एडवोकेट
राजसमंद

पशु चिकित्सालय शिफ्ट हुआ तो करेंगे उग्र आंदोलन : चौहान

राजसमद जिला पशु चिकित्सालय नाथद्वारा ले जाना गलत है। सीपी साहब कांग्रेस के बड़े नेता हैं, वो चाहे तो नाथद्वारा को पशु चिकित्सा के मामले में वहां की जनता को बड़ी सौगात दे सकते हैं, लेकिन राजसमन्द की जनता का हक मारकर नहीं। प्रशासन की अकर्मण्यता और पंगुपन के कारण राजसमन्द की जनता का हक मारा जा रहा है। जो जमीन यहां के लिए आवंटित हुई है, उसी पर बहुउद्देशीय जिला चिकित्सालय बनना चाहिए। प्रशासन वो जमीन कब्जे में नहीं ले सकती हैं, तो इसका मतलब प्रशासन भी कांग्रेस सरकार के दबाव में काम कर रहा है। लेकिन राजसमन्द की जनता अपने साथ अन्याय नहीं होने देगी। इसके लिए अगर आंदोलन भी करना पड़े तो हम तैयार है।

महेंद्र सिंह चौहान
जिला मंत्री भाजपा राजसमंद

क्या राजसमंद के नेता भी मिले हुए हैं?

राजसमन्द जिला मुख्यालय पर वर्षों से बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय राजसमन्द के नाम से किशोरनगर मे स्थापित है। उक्त चिकित्सालय में एक्सरे मशीन व अत्याधुनिक जांच मशीनें स्थापित है। उक्त चिकित्सालय मे पांच डॉक्टर सहित कम्पाउंडर, हेल्पर, टेक्नीशियन सहित 22 पद स्वीकृत है। इसके विस्तार के लिए धोइन्दा में भूमि भी आवंटित हुई। वर्तमान में कांग्रेस सरकार होने से अपने प्रभाव व रसूख का दुरुपयोग करते हुए नाथद्वारा विधायक द्वारा उक्त चिकित्सालय को राजसमन्द से नाथद्वारा स्थानांतरित करने के आदेश करवाए गए है, जो राजसमन्द के साथ उनकी दुर्भावना को एक बार फिर प्रमाणित कर रहा है। आश्चर्य तो इस बात का हो रहा है कि नगरपरिषद राजसमन्द द्वारा कोई विरोध नहीं किया गया। साथ ही भाजपा व कांग्रेस के राजसमन्द के जनप्रतिनिधियों व नेताओं की चुप्पी भी गहरे षड्यंत्र की ओर इशारा कर रही है। राजस्थान सरकार की उक्त दुर्भावनापूर्ण कार्रवाई के खिलाफ राजसमन्द की जनता को सड़क पर उतरना होगा। यदि प्रशासन ने तुरन्त इस पर रोक नहीं लगाई व उक्त आदेश निरस्त नहीं किया तो इस अन्याय के खिलाफ आंदोलन का रास्ता अपनाया जाएगा।

भरत पालीवाल
पूर्व जिलाध्यक्ष भारतीय किसान संघ

अब तक राजसमंद की जनता के साथ अन्याय हुआ, मगर अब यहां के पशुओं के साथ भी

मैं यह जानना चाहती हूं कि जिला मुख्यालय पर पशु चिकित्सालय की जमीन यदि विवादित थी। तो क्यों नहीं अब तक दूसरी जमीन आवंटित की गई। यदि आपको चिकित्सालय बनाना ही है तो एक और नाथद्वारा बना लें। यहां से नाथद्वारा ले जाना कैसे जायज है? वैसे भी राजस्थान में राजसमंद अपने आप में एक यूनिक जिला है जिसमें जिला मुख्यालय पर कोरोना टेस्टिंग लेब ना होकर नाथद्वारा में स्थापित की गई है। मैं मानती हूं कि नाथद्वारा में भी श्रीनाथजी के हिसाब से गौ सेवा की आवश्यकता रहती है। मगर राजसमंद से नाथद्वारा चिकित्सालय क्यों ले जा रहे हैं, वहां नया स्थापित कर सकते हैं। राजस्थान में कितनी जगह ऐसी है, जहां एक से अधिक बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय हैं। मगर यहां राजसमंद से छीनकर नाथद्वारा ले जाना कहां तक उचित है। अब तक सिर्फ राजसमंद की जनता के साथ विश्वासघात और अन्याय हो रहा था, अब तो राजसमंद के पशुओं के साथ भी अन्याय होने लगा है। मैं इसके लिए मुख्यमंत्री जी एवं पशु चिकित्सा मंत्री को पत्र लिखूंगी। यहां की जनता से भी मैं यह कहना चाहूंगी कि यह किसी पार्टी का मुद्दा नहीं, बल्कि राजसमन्द के हक की लडाई है। इसके लिए हम सभी एक होकर विरोध करें। हम किसी भी सूरत में यह जाने नहीं देंगे।

दीप्ति माहेश्वरी
विधायक, राजसमंद

थारी- मारी करने से फुर्सत मिले, तब बात बनें

राजसमंद में पशु चिकित्सालय कहीं पर भी चला जाए, लेकिन सुविधाएं तो वही की वही तुरमुर ढर्रे वाली ही रहेगी। पशु चिकित्सालय में चिकित्सक कम बिजनेसमैन लगे हुए है, जो केवल नाममात्र के पशु चिकित्सक है। जिला मुख्यालय पर पशु चिकित्सालय होने के बाद भी पशु चिकित्सकों ने क्या तीर मार लिया? कौनसा किसी घायल पशु का एक फोन पर मौके पर जाकर उस बेजुबां का ईलाज किया या जान बचाई। इन चिकित्सकों के नाम के आगे जो लग रह रहा है, वैसा ही मानस बना हुआ है। जिला मुख्यालय पर एक भी पशु चिकित्सा एंबुलेंस नहीं है, जबकि जनप्रतिनिधि चाहे तो किसी भी उचित योजना के नियमानुसार वाहन खरीद सकते हैं। जैसे स्थानीय विधायक व सांसद विकास योजना से नियमानुसार पशुओं के लिए एंबुलेंस खरीदी जा सकती है, लेकिन कभी किसी ने नहीं सोचा। राजसमंद जिला मुख्यालय से चिकित्सक चले गए, कॉलेज चले गए, चिकित्सकीय मशीनें चली गई, धीरे- धीरे सब जा रहे हैं। एक दिन कलेक्ट्रेट, सरकारी विभाग, जिला चिकित्सालय सब कुछ चला जाएगा और फिर बचेंगे क्या? बाजार के विद्युत तारों पर बैठते कबूतर...। सब जाना ही है तो इसे जिला मुख्यालय क्यों बना रखा है। ग्राम पंचायत घोषित कर दो, ऐसा ही रहा तो वो दिन दूर नहीं, जब जिला मुख्यालय को ही बदल दिया जाएगा। राजसमंद के लोग पर एक- दूजे की टांग खिंचने, पान व गुटखे खाकर सड़क को लाल- पीला करने, चाय की थड़ियों व पान के गल्लों पर थारी- मारी करने, फालतू की राजनीतिक फांकलेट करने, चौपाटी पर खड़े होकर पटाखे फोड़ने में ही रह जाएंगे और पीछे से सब कुछ चला जाएगा।

जयंत पालीवाल
पत्रकार, राजसमंद

हमारी सनातन संस्कृति और महाकाव्य पर लिखने वाले देश एक प्रतिष्ठित लेखक श्री सर्वेश तिवारी 'श्रीमुख' ने हमारी जयवर्द्धन के लिए लेख भेजने पर सहमति दी है। आशा हैं, उनके आलेख सभी को बेहद पसंद आएंगे।

अयोध्या जी !

तुलसी बाबा अयोध्या जी को पिता का घर कहते थे। है भी! कोई संदेह नहीं। अयोध्याजी हमारे लिए हमारे बाप का घर ही है। पर अभी अयोध्या जी का स्मरण होते ही एक अद्भुत ऊर्जा और आत्मविश्वास प्राप्त होता है। भरोसा होता है कि कुछ भी असम्भव नहीं।

सोच कर देखिए, दो शताब्दियों तक क्रूर आतंकी मुगलों का अधिपत्य, उसके बाद डेढ़ शताब्दी तक लुटेरे अंग्रेजों की गुलामी और फिर स्वतन्त्रता के नाम पर फर्जी सेक्युलरिज्म का बंधन। इस लंबे कालखंड में यह सोचना कितना कठिन रहा होगा कि दिन बदलेंगे। कितना कठिन रहा होगा, यह सोचना भी कि अयोध्या के माथे पर लगा कलंक धुलेगा। एक सामान्य व्यक्ति तो वर्ष दो वर्ष की कठिनाई से हार मान लेता है, यहां तो लगभग पांच शताब्दियां अंधेरे में गुजर गई थीं।

ठीक से जगह याद नहीं आ रहा, पर जब बाबर ने मन्दिर तोड़ा तबसे अयोध्या के आसपास के असंख्य गांवों के ठाकुरों ने यह प्रण लिया था कि जब तक पुनः मन्दिर नहीं बन जाता, तब तक पगड़ी नहीं पहनेंगे। इस प्रण के साथ लगभग पच्चीस पीढियां निकल गईं। उस प्रण को ढोते ढोते क्या कभी उनका मन थका नहीं होगा? क्या कभी प्रण छोड़ने का मन नहीं किया होगा? क्या कभी आत्मविश्वास नहीं डगमगाया होगा? ऐसा बिल्कुल हुआ होगा और असंख्य बार हुआ होगा, पर पांच सौ वर्षों के बाद ही सही, आखिर दिन बदले! अयोध्या के माथे पर लगा कलंक धुला, भारत का प्रण पूरा हुआ।

मेरे लिए अयोध्या इस भरोसे का प्रतीक है कि अंधेरा कितना भी घना क्यों न हो, वह छंटता जरूर है। यदि राम के काज में इतनी देरी हो सकती है, हम सामान्य जन की बात ही क्या?

व्यक्तिगत या सामाजिक किसी भी स्तर पर यदि आत्मविश्वास डगमगा, तो एक बार अयोध्या की ओर देख लीजिए, साहस बढ़ जाएगा। यदि कोई भी मुद्दा सुलझता हुआ नहीं दिख रहा हो तो अयोध्या जी को प्रणाम कीजिए और भरोसा रखिए कि धर्म की विजय होगी। इसे कोई रोक नहीं सकता। अंधेरे का छंटना एक अवश्यम्भावी घटना है, बस हृदय में धर्म और प्रतीक्षा करने का साहस होना चाहिए। एक बार और यदि कोई और शूल लम्बे समय से हृदय में चुभ रहा हो तो स्वयं से पूछिए 'का चुपि साध रहे बलवाना?' करना तो तुम्हे ही है मित्र!

सर्वेश तिवारी श्रीमुख
गोपालगंज, बिहार
मो. 86514-19161

राजसमंद आज कल और कल

आइए जानें अपने शहर को

कोई इतिहास नायक यों ही नहीं बनता

पद्मावतीजी महाराज नारी शक्ति के राज तंत्र के साथ संयुक्त होकर अपने नगर के विकास की संभावनाओं की खोज करने का दूसरा नाम था। कांकरोली के प्रति उदयपुर राज्य के आदर व सद्भावना के भाव ने सदैव रियासत के मन में नगर के बहु आयामी विकास का एक सोफ्ट कोर्नर प्रदान किया जो कांकरोली के आने वाले समय के लिये एक स्थायी परंपरा बन गया।

इस प्रसंग में समीपस्थ नाथद्वारा विकास की ओर एक विहंगम दृष्टि डाली जाये तो ज्ञात होगा कि यहां नगरीय संरचना के जो प्रयास किये जा रहे थे वे कांकरोली को समानान्तर विकास के लिये स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा का वातावरण निर्मित करने के लिये धरातल का काम कर रहे थे। यह समय लगभग वि0सं01917 का था जब तत्कालीन नाथद्वारा तिलकायत श्री गिरिधारी जी नगर के ढांचे को सुदृढ़ करने हेतु प्रयास प्रारंभ कर चुके थे। नाथद्वारा को संरक्षित करने हेतु अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाने का कार्य हो, कोतवाल चौकियों के निर्माण की बात हो, नगर जन के बीच अपने निर्णयों द्वारा न्यायपूर्ण वातावरण विकसित करने के प्रयास हों, गोवंश के विस्तार के कार्य हों, बनास नदी पर पुल निर्माण या मावली सड़क निर्माण जैसे ढांचागत विकास के कार्य हों, पुस्तकालय, स्कूल, अस्पताल के विकास की दृष्टि हो या विद्वानों के आश्रय द्वारा यहां साहित्यिक, सांस्कृतिक वातावरण के विकास का विषय होएनाथद्वारा के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करने हेतु कांकरोली को तब प्रेरणा ही मिली। निस्संदेह गिरिधारी जी व पद्मावती जी व उनके निर्देशन में प्रगतिगामी होने को तैयार होते उनके दत्तक पुत्र श्री गिरिधर जी की कार्य शैली में किंचित अंतर रहा। इस अंतर के रहते इसका लाभ अंतत कांकरोली को इस काल खंड में किंचित अधिक मिला। उदयपुर महाराणा सज्जनसिंह व गिरिधरजी के बीच सद्भावपूर्ण संबंधों का प्रसार अगले महाराणा शेरसिंह जी तक भी बना रहा। यह मात्र दोनों नगर की तब की कार्यशैली के पृथक् पृथक् दृष्टिकोण के कारण हो सका। जो भी हो, कांकरोली के आम जन को अपनी समस्याओं के समाधान का रास्ता मिलता रहा। संबंधों के माधुर्य का ही प्रभाव था कि तांत्या टोपे के साथ राज्य के सिपाहियों के संघर्ष की रण स्थली बनने से कांकरोली बच गया।

कांकरोली के लिये पद्मावती जी के निर्देशन में गिरिधरजी द्वारा किये जा रहे विकास के प्रयासों की भूमिका का समय कहा जा सकता है यह। आपदा प्रबंधन और जनप्रिय विकास के कार्यों की श्रृंखला में हम वि0सं01925 के वर्ष की ओर दृष्टि डालें। सम्पूर्ण क्षेत्र भीषण अकाल और हैजा महामारी से जूझ रहा था। जैसे तैसे यह वर्ष गुजरा कि अतिवृष्टि और दूषित जल व अन्न ने त्राहि त्राहि मचा दी। ऐसी विकट परिस्थिति में गिरिधरजी के प्रयास और राणा शेरसिंह जी के संबलन से परिस्थितियों को नियंत्रित करने में बहुत सफलता मिली। अकाल की विभीषिका से मुक्ति के लिये यहां की जनता को राहत देते हुए अकाल राहत कार्य की विस्तृत योजना बनी। इसके तहत विट्ठलविलास बाग के अन्दर मंदिर और बाग के चारों ओर की दीवारों(कोट)का निर्माण, मरम्मत का कार्य करा जनाकांक्षा व जनहित कारी सोच का उदाहरण प्रस्तुत किया गया। यह कार्य वि0सं01926 से प्रारंभ होकर वि0 सं01935 तक चला। कल्पना की जा सकती है कि इस दीर्घावधि में हुए कार्यों से गरीब जनता को कितना सहारा मिला होगा।

अकाल की दुर्निवार परिस्थितियों में जहां प्रतिदिन के भोजन के जुगाड़ की व्यवस्था एक समस्या थी, के निवारण का एक प्रयास तब मन्दिर द्वारा किया गया था। वह था अन्नकूट के अन्न का व्यापक रूप से ग्राम नगर की प्रजा में मुक्त भाव से वितरण। इस मानवीय प्रयास का उल्लेख इतिहास में संभवत बहुत कम शब्दों में किया गया लेकिन यह एक वृहत् भावना की श्रीमंतों द्वारा निर्धनों के प्रति की गयी अभिव्यक्ति थी। ऐसी मानवीय त्रासदियां आती रही हैं, हम अभी अभी गुजरे भी हैं लेकिन प्रतिदिन या इस अवधि में कभी कभी ही सही, भगवान के भंडार इस निमित्त लुटाये जाने का हमारा विचार और भावना क्यों नहीं बनीएयह प्रेरणा या संज्ञान काश उक्त अवधि में लिये गये निर्णय से लिया गया होता। सच तो यह है कि कोई इतिहास नायक यों ही नहीं बनता। वस्तुत: जन संवेदना से जुड़कर ही इतिहास की रचना होती है। यही क्यों ? हम इतिहास से प्रेरणा लेने के अवसर खो देंगे यदि घटनाओं की गवेषणा या व्याख्या अब जन इतिहास के नजरिये से करना प्रारंभ नहीं करेंगे।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

तुम हो सृजन शरीर

ना मीरा ना मीर हो
तुम नाहिं सूर कबीर,
साहित्य अगर है आत्मा
तो तुम हो सृजन शरीर।

तुम शारद सुत, साहित्य उपासक
उच्च विचारक हो ज्ञानी
विद्या विवेक विज्ञान विषारद
सदाचारिता के स्वामी।

हो सृजनकार, संस्कार सकल,
तुम सत्य शपथ के हम राही
अरुण उदय साहित्य किरण
तुम मौलिकता के अनुयायी।

प्रगति पथ के प्रिय पथिक
अमृत वाणी के वक्ता
अनुरागी मन के अनुग्राही तुम
सनरसता के प्रखर प्रवक्ता।

ओ नीति निर्धारक नैतिकता के
मानवता के महा स्वामी
ना द्वेष, रोष ना अभिमान तुम्हें
तुम कलमकार स्वाभिमानी।

है सरस्वती के साधक सागर
तुमको कर बंधन कर वंदन है,
है शब्द अर्थ के आराधक तेरा
शत शत शत अभिनंदन है।

दोहों भरी सौगात

अफजल तेरी लेखनी, परखी सौ सौ बार।
सच्चाई में तरबतर, निकली वो हर बार।।

सच्चाई के पथ चले, सत्य का देती साथ।
ना कोई नाराज हो, ऐसी करती बात।।

खनकदार आवाज में, मधुर स्वरों की धार।
जैसे मांझी गा रहा, झूम रही पतवार।।

सर्व धर्म को मानता, हिन्दू ना मुसलमान।
कोई पूछे धर्म तो, कहता बस इंसान।।

जन जन का है लाड़ला, तू यारों का यार।
गुरु शिष्य साथी सभी, करते तुझसे प्यार।।

संस्कृति व साहित्य, कला, तीनों तेरे पास।
कवि सम्मेलन किए मगर, हिंगोरा है खास।।

रहता अपनी आन से, देता सबको मान।
आज गुरुवर अफ़जल का, करते हम सम्मान।।

देश के प्रख्यात राजसमंद के लेखक कमर मेवाड़ी एवं अफ़जल खां अफ़जल के लिए कवि प्रमोद सनाढ्य का शब्द सम्मान

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक
कराएं प्रति :
94142-39648

भक्त की अभिलाषा

देशभक्ति में घोर आस्था रखने वाला एक भारतीय एवरेस्ट शिखर की चोटी चढ़ कठोर तपस्या करने लगा। भूखे-प्यासे अर्धनग्न अवस्था में तपस्यारत भक्त की स्थिति को देखकर इंद्र की गद्दी वाइब्रेट करने लगी।

भक्त की भक्ति से ज्यादा इंद्र के भय और अनुनय के प्रेशर में ब्रह्माजी को अंततः तपस्यारत भक्त के सामने प्रकट होना पड़ा।हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हुए पुत्र आंखें खोलो। परमपिता की आवाज को नजरअंदाज कर भक्त समाधि में उसी प्रकार तल्लीन रहा, जिस प्रकार ऑनलाइन फेसबुक उपभोक्ता! ब्रह्माजी बार-बार पुकारे जा रहे थे, लेकिन ढीठ भक्त अपनी आंखें खोलकर तपस्या भंग करने के मूड में नहीं था। खीजकर ब्रह्माजी चिल्लाए। आखिरी बार बोल रहा हूं आंखे खोलो... अन्यथा हम लौट रहे हैं ब्रह्मलोक को...।

ब्रह्माजी का अल्टीमेटम सुन भक्त ने कनखियों से ब्रह्माजी की ओर देखा। साक्षात चतुर्भुज को सामने देख मारे खुशी से चिल्ला पड़ा- क्षमा प्रभु क्षमा! मुझे लगा कोई आपके नाम पर मेरी फिरकी ले रहा है इसलिए जानबूझकर अंखिया मूंदे खड़ा था। प्रभू हम आपके सबसे बड़े भक्त है!

ब्रह्माजी मुस्कुराते हुए बोले-भक्त तो राजनेताओं के होते है वत्स! तुम तो मेरे मानस पुत्र हो! हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूं मांगो क्या चाहिए!

ब्रह्मा जी के डोनर मूड को देखते हुए भक्त बोला- प्रभू आपकी दया से आलरेडी मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, बैंक बैलेंस...। तो मां चाहिए तुम्हे ब्रह्मा जी ने बीच में ही टोका। आप भी न ब्रह्मा से बच्चन बने जा रहे है पहले मेरी बात तो पुरी सुन लीजिए। शीघ्र और संक्षेप में बताओ वत्स मेरे पास समय कम है ब्रह्माजी ने आगाह किया। आपको क्या यूपी विधानसभा चुनाव की तैयारी करनी है प्रभू जो टाइम का टोटा है। वत्स तुम भी न! अच्छा चलो समय दिया..... मांगो क्या चाहिए! खीजते हुए ब्रह्मा जी बोले। प्रभू मुझे वरदान दें कि मैं अगले छः जन्म भारत में ही जन्म लूं!

भक्त की बात सुन ब्रह्मजी मुस्कुराते हुए बोले- धन्य हो वत्स! कितनी साधारण इच्छा है तुम्हारी। समझ गया तुम पृथ्वी के ऐसे भूखंड पर जन्म लेना चाहते हो जो देवभूमि है जहां राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर ने जन्म लिया है। ऐसी बात नही है प्रभू हमारा देश भारत संपूर्ण ब्रह्मांड में अद्वितीय है प्रभू यह ऐसा प्रदेश है जहां ब्लड रिलेशन से ज्यादा तवज्जो डेमोक्रेसी को दिया जाता है। लोग भले ही अपने बेटे बेटियों की शादी अन्तर्जातीय से कर दे लेकिन मतदान जाति देखकर ही करते हैं! अब और कितनी महिमा गाऊं इस पुण्य प्रदेश की प्रभू! इस भारतीय धरा पर भले ही योग्यता धरी की धरी रह जाए लेकिन सरकारी नियोजनए प्रमोशन और योजनाओं के क्रियान्वयन में जाति प्रमाण पत्र हमेशा भारी पड़ जाती है। यह वो भूखंड है प्रभू जहां चित्रगुप्त की दंड संहिता वाली धार्मिक पुस्तक से भी बड़ी विश्व की सबसे बड़ी विधि पुस्तक : संविधान द्वारा विधि विधान का नियमन किया जाता है। इस पावन भूमि पर जीवन के तीस-पैतींस साल सरकारी सेवा देने वालों को पेंशन भले ना मिले लेकिन तीर-तुक्का एवं जोड़ जुगाड़ से एक बार माननीय विधायक से सांसद पद धारण करने वाले खादी मानव को पदधारण से शवयात्रा निकलने तक सभी प्रकार का भत्ता मिल जाता है। आप इस देश में जन्म लेकर भी दुश्मन मुल्क की जिंदाबाद का उदघोष कर सकते है, लेकिन वत्स जब जन्म ही लेना है तो अमेरिका, रूस, चायना जैसे अमीर और श्रेष्ठ देशों में जन्म लो भारत में ही क्यों? ब्रह्मजी ने बीच में ही टोका।

ब्रह्म जी की बातों से भक्त थोड़ा आहत हुआ फिर संभलते हुए बोला-प्लीज डोंट ट्राय टू मिसगाइड मी प्रभू! फोर योर काइंड इन्फोर्मेशन सर्वाधिक जनसंख्या वाले चायना में भी वीवीआईपी लगभग साढे चार सौ और यूएसए में महज ढाई सौ है तो आप ही बताइए पांच लाख अस्सी हजार वीवीआईपी की संख्या वाले भारतवर्ष में जन्म लेना उचित है कि कम सीट वाले देशों में जन्म लेकर बैकुंठ सुख वाले वीवीआईपी पद के लिए करमफोड़ी करने में! कहने को तो आप सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी कहलाते हैं लेकिन जानकारी लोकल न्यूज चैनल वाली भी नही रखते हैं! अब सपोज हम अमेरिका के प्रसिडेंट या चीन में कोई मंत्री बन भी गए तो क्या उखाड़..... क्षमा प्रभू आवेश में शब्दों का समायोजन नही कर पा रहा। मेरा आशय है कि क्या कर पाऊंगा। यदि अमेरिका का प्रसिडेंट बन जाऊं तो चार साल बाद जीवन यापन के लिए किसी पिज्जा-बर्गर डिलवरी ब्वाय बनना पड़ेगा अथवा चायना का ही मंत्री बन गया और

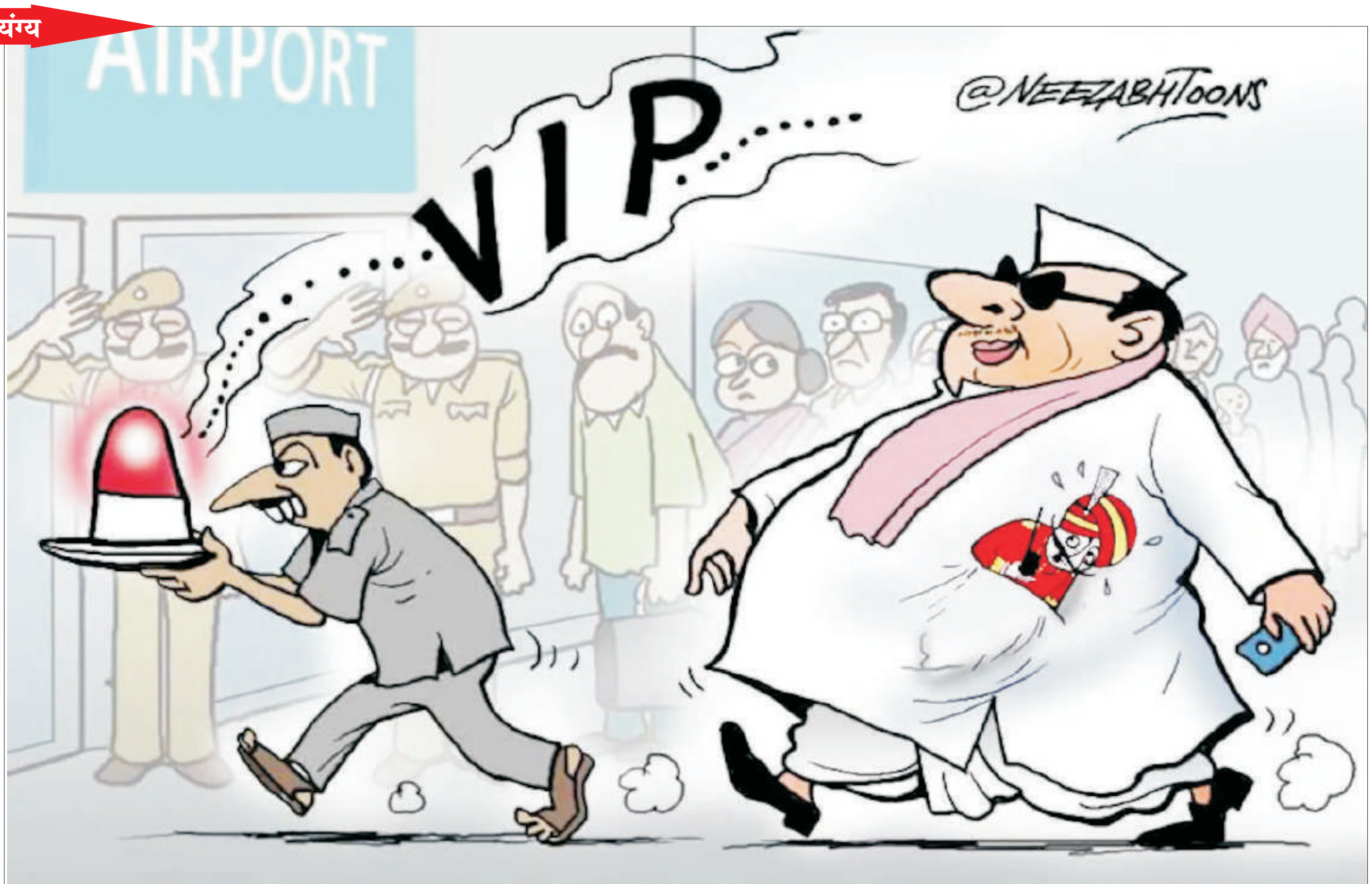

मोहवश सरकारी कोष से थोड़ी बहुत हेराफेरी कर दी तो चायनीज सरकारी विधान से फांसी पर लटका दिया जाऊंगा न ! इन मामलों में हमारा भारत सहिष्णु और उदार है। कहने को लोकतंत्र है लेकिन लोकनीति की बजाय राजनीति चलती है एक बार संसदीय राजनीति में इंट्री करने भर की देर है फिर क्या परिवार से दूर के रिश्तेदार तक को राजनीतिक पद पर आसीन करने का कॉपीराइट स्वत: मिल जाता है। रही बात रिटायर मेंट की तो आर्यावर्त की पॉलिटिक्स में कभी कोई रिटायर नही होता! स्थायी आजीवन पेंशन और अन्य भत्ता के साथ.साथ अवसर अनुकूल विभिन्न पार्टियों से जुड़कर 'स्व ' जन सेवा करते रहना है।

दूसरी बात मेरा देश सर्वश्रष्ठ है। अत: अमेरिका चायना रूस आदि से इसे कमतर आक आप मेरी राष्ट्रभक्ति को आहत करने का दुस्साहस ना करें। आपकी जानकारी के लिए बता दूं धन धान्य के मामलों में हमारा देश अमेरिका और चायना से भी आगे है। हम भारतीय नेताओं/ अभिनेताओं/ व्यापारियों/ संस्थानों के खरबों की राशि से ही स्वीस बैंक पुष्पित-पलल्वित होता है। हमारे यहां सरकारी इंजीनियर या किरानी के घर भूले भटके भी छापा पड़ जाए तो अरबों रूपये के कैश जेवरात प्रोपर्टी मिल जाते हैं। खबरदार हमारे देश को गरीब कहा तो.... थोड़ी देर के लिए मैं आपकी भक्ति भूल सकता हूं लेकिन राष्ट्रभक्ति कदापि नहीं! वंदे मातरम! भारत माता की जाय...!

भक्त को उद्वेलितहोता देख ब्रह्मा जी सकुचाते हुए बोले- अरे तुम तो नाहक क्रोधित हो गए वत्स! भक्त आप तो बात ही उत्तेजित करने वाली कर देते हो! कैसे कहते हो गरीब देश है। अरे प्रति वर्ष यहां अरबों- अरब का घोटाला हो जाता है। फिर भी अर्थव्यवस्था की अवस्था सदैव तंदुरूस्त ही रहती है, लेकिन वत्स तुम्हारे सोने की चिड़िया को पहले अंग्रेज बिल्लौटा ने नोचा और अब खादी बागड़ बिल्ले...।

ब्रह्माजी की बात को काटते हुए भक्त बोल पड़ा- आप भी न हद भौकाल मचाते हैं स्वामी! इसलिए केवल पुष्कर में ही सीमित होकर रह गए हैं। जब देश अपना है, राजकोष अपना है तो अपने लोग ही न खाएंगे! कि खाने के लिए होनोलूलू से नेता, कर्मचारी और पदाधिकारी आएगा।

व्यग्र भक्त का तर्क और देवभूमि पर शेष छ: जन्म पदार्पण की उत्कट इच्छा सुनकर ब्रह्माजी समझ गए कि भारतीय भक्त को बरगलाना व्यर्थ है अंततोगत्वा तथास्तु कह अंतर्धान हो गए।

विनोद कुमार विक्की
ग्राम पोस्ट महेशखूंट बाजार
जिला खगड़िया बिहार 851213
मो. 7091223635

तुम्हारे बिना अधूरा हूं मैं

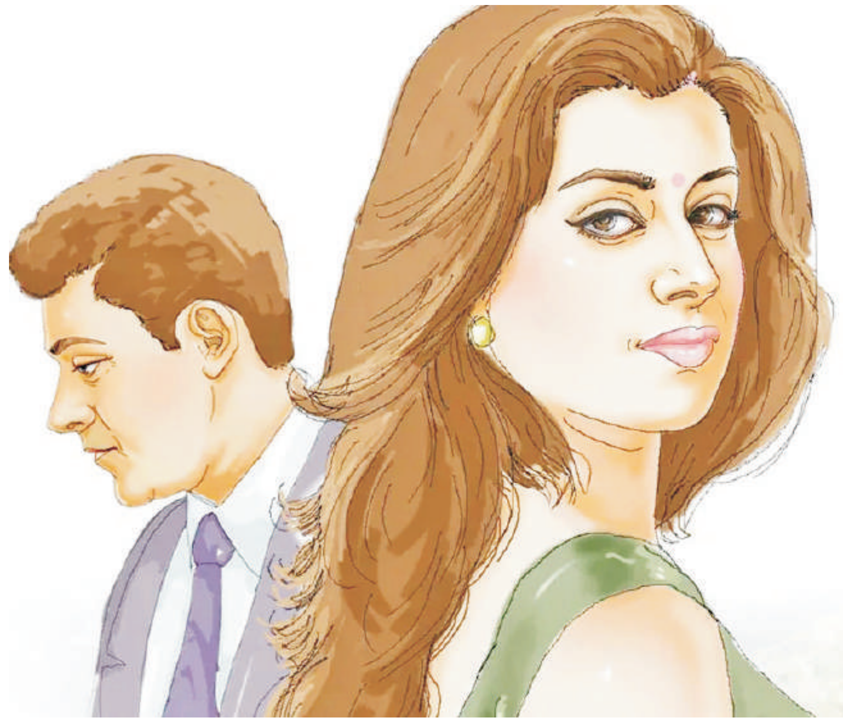

'तलाक केस के नियमानुसार आप दोनों को सलाह दी जाती हैं कि एक बार काउंसलर से मिलकर आपसी मतभेद मिटाने की कोशिश करें।' तलाक केस की सुनवाई करते हुए जज ने कहा।

अगले ही मंगलवार सुषमा और अजीत दोनों काउंसलिंग सेंटर पर जाते है। सुषमा के साथ उसके भैया-भाभी तो अजीत के साथ उसके कुछ दोस्त थे। काउंसलर ने सिर्फ सुषमा और अजीत को अंदर आने को कहा। अंदर आते ही काउंसलर ने पूछा, 'आप दोनों अपनी मर्जी से तलाक चाहते है या किसी के बहकावे / दबाव में आकर।' दोनों को चुप देखकर काउंसलर ने कहा, यही टेबल पर बैठकर थोड़ी देर आपस में बात कर लीजिए आप दोनों।'

टेबल पर बरकरार चुप्पी को तोड़ते हुए अजीत ने पूछा-'कैसी हो सुषमा ?

'ठीक हूं, आप कैसे हो? खाना और दवा इत्यादि टाइम पर खाते हो न,आपका हेल्थ डाउन दिख रहा ?'

'हां, तुम्हारे नाराज होकर जाने के बाद ज़िम्मेदारी एवं तनाव दोनों बढ़ गया। आज भी बहुत मिस करता हूं तुम्हें।'

'मैं भी आपको बहुत मिस करती हूं, पर..... ।' 'पर क्या, सुषमा ?' अजीत ने सुषमा के हाथों पर हाथ रखते हुए पूछा।

'अजीत, मैं अपने घर की सबसे छोटी बेटी हूं सभी ने मुझे काफी लाड़-प्यार दिया है। कभी किसी चीज कमी नहीं रही मुझे।' 'हां, तो फिर सुषमा ..... !'

'छोटे के कस्बे में रहने और सास-ननद के रोका-टोकी के साथ इतनी जिम्मेदारी मेरे से नहीं हो पाती। फ्री लाइफ जीना पसंद किया है मैंने हमेशा।'

'इसमें क्या सुषमा !, तुम्हारे साथ मैं हूं न, कुछ दिन एडजस्ट कर लेती, धीरे-धीरे तुम उन्हें समझती और वह लोग तुम्हें।' 'पर अजीत, मैंने तुमसे शादी की है, तुम्हारे साथ रहना पसंद करूंगी।' 'ठीक है, सुषमा, मैं भी तुम्हें अपने साथ रखना चाहता हूं और रही बात छोटे के कस्बे में रहने की तो वहां तुम्हें रहना ही कितने दिन था, मेरे छुट्टियों के दिन में मेरे साथ या फिर कभी-कभार किसी जरूरत पर कुछ दिन या माह मेरे बिना। बाकी समय मेरे साथ रहना था तुम्हें।' 'फिर भी अजीत... !'

'फिर भी क्या, तुम्हारे मन में कोई बात थी तो मुझसे कहती, नाराज होकर तुम्हारा मायके चले आना कितना सही है, सुषमा ?' मैंने आपको कॉल किया था बताने के लिए। लेकिन आप ना मुझे समझ पाए, ना मेरी इच्छाओं को।

'सुषमा उस दिन मैं मीटिंग था। कॉन्फ्रेंस रूम में होने के बावजूद मैंने तुमसे बात की। सोचा शाम को घर पहुंच शांति से दुबारा बात करूंगा तुमसे। शाम को कई बार तुम्हें फोन किया पर लगा नहीं। मां से पूछा तब पता चला तुम भैया के साथ मायके चली आई। कई बार मैंने तुमसे बात करने की कोशिश किया। तुम्हारे भैया-भाभी को भी फोन किया था मैंने। तब जाकर पता चला तुम मुझसे बात नहीं करना चाहती।' अपनी बात आगे कहते हुए अजीत ने कहा। 'तुम्हें मनाकर वापस ले आने के लिए मैंने अगले महीने सहारनपुर आने का भी प्लान किया था। लेकिन उसके पहले नोटिस मिल गई मुझे तलाक की।' 'पर अजीत..... !'

'पर क्या सुषमा, तुम बात करने को तैयार नहीं थी, बिना बात किए हमारे बीच नाराजगी कैसे ख़त्म होती ? कैसे भूल गई तुम ? पहली बार जब सहारनपुर में तुमसे मिला था और कुछ पल के मुलाकात में तुम्हारे हाथ को पकड़ते हुए मैंने कहा था कि ये हाथ पकड़ रहा हूं मेरे आखिरी सांस तक छूटने मत देना अपने हाथों को, हमेशा मेरे साथ रहना। आज उसके कुछ ही महीने में हमारा रिश्ता टूटने के कगार पर आ गया ?'

'मैं भी आपको छोड़ना नहीं चाहती हूं, पर शादी के बाद मुझे बहुत सी चीजें पसंद नहीं आई। जैसे तुम्हारे बिना कस्बों की लाइफ इत्यादि।'

'जो चीजें पसंद नहीं आई उस पर हम दोनों बात करते तो उसका कोई न कोई हल जरूर निकल आता। रिश्ते बरक़रार रखने के लिए कुछ तुम कहती कुछ मैं... हम दोनों समझते एक दूसरे को ...! आखिर मेरे विश्वास पर तुम अपना घर परिवार छोड़ यहां आई थी। जो समस्याएं थी उस पर बात करते हम दोनों बड़े बुजुर्गों ने भी कहा है कि बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आपसी संवाद से निकल आता है। बातचीत बंद होने के कारण आज हमारे रिश्ते खत्म करने के कगार पर आ गए।' दु:खी स्वर में अजीत ने अपनी बात खत्म की।

'मैंने आपसे शादी किया है आपके साथ रहने के लिए। आपके मम्मी पापा चाहे तो हमारे साथ आकर रह सकते हैं चंडीगढ़ में।' 'क्या लगता है तुम्हें सुषमा, मुझे तुम्हारे बिना अच्छा लगता है? टिकट तुम्हारा भी कराया था मैंने साथ आने के लिए लेकिन अचानक से मम्मी की तबीयत खराब होने के कारण मुझे अकेले आना पड़ा। मेरी पत्नी होने के साथ-साथ तुम उनकी बहू भी हो। जरूरत के वक्त दोनों को दोनों के परिवार को अपना मानकर उनके साथ होना जरुरी हैं। मम्मी के डॉक्टर खुराना से मेरी बात हुई हैं। डॉक्टर साहब बोल रहे थे कि एक से दो महीने के अंदर मम्मी चलने फिरने लायक हो जायेंगी।'

'ये तो बहुत अच्छी खबर है अजीत, चिंता मत करो आप भगवान जल्दी ठीक कर देंगे मम्मी जी को। वैसे आगे क्या करने सोचा है आपने।'

'सोचना क्या सुषमा, मैंने तुमसे प्यार किया है। मैं तुम्हें पसंद करता हूं ये बात घर पर बताकर सबको राजी किया था मैंने शादी के लिए। बस दु:ख इतना है कि ये रिश्ता मैं बचा नहीं पाया।' अजीत ने अपनी बात को विराम देते हुए कहा।

'इतना होने पर भी आज क्या आप मुझसे उतना ही प्यार करते हो ? सुषमा ने पूछा।

'हां सुषमा, भले ही कल हमारे रिश्ते नहीं रहेंगे पर तुम्हारे साथ बिताए हर एक पल का अहसास मेरे साथ रहेंगे।'

'अच्छा ठीक है, चलो अब मैं चलती हूं। भैया-भाभी इंतजार कर रहे होंगे, लेट हो रहा मुझे अब।'

'ओके सुषमा अपना ख्याल रखना। सोचा था बात करके सब ठीक कर लूंगा। पर कोई बात नहीं, कोर्ट के अगली तारीख को कोर्ट नहीं आऊंगा मैं। डाक से भिजवा देना पेपर मैं साइन कर दूंगा तलाक के पेपर पर।'

'ओके मत आना! आपको आने की जरूरत भी नहीं हैं लेकिन हो सके तो सहारनपुर आ जाना मुझे ले जाने के लिए।'

'क्या...क्या... क्या कहा तुमने सुषमा? ' अजीत ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'वही जो आपने सुनाए मैं भी आपके फोन को नजरअंदाज न करती तो ये मसला आपसी सहमति से कब का सुलझ गया होता। रिश्ते बचाने के लिए मैंने भी समय नहीं दिया और लोगों के बहकावे में आकर रिश्ता तोड़ने की सोच ली।'

'वही सुषमा, ब्याह कर तुम्हें मैं लाया हूं। तुम्हें खुश रखने की जिम्मेदारी मेरी है। लेकिन उन जिम्मेदारियों के साथ हमें इस जीवन के सफर में अनेक जिम्मेदारियों का रोल अदा करना होता है और इसमें हमें एक दूसरे का पूरक बनना होगा। वादा करो आगे फिर कभी जीवन के इस सफर में लड़खड़ाई तो मुझे अकेला छोड़कर वापस नहीं जाओगी बल्कि एक आवाज देकर मेरा हाथ थामकर साथ चलोगी।'

'ठीक है बाबा, अब वादा करती हूं मैं कभी नाराज होकर हीं जाऊंगी। तुम भी अब थोड़ा सा स्माइल दें दो।' सुषमा ने कहा।

इतने में अजीत सुषमा को गले लगाते हुए बोल पड़ा, 'पगली कभी छोड़ के मत जाना। तुम मेरी अर्धांगिनी (आधा अंग) हो और तुम्हारे बिना अधूरा हूं मैं। आई लव यू सोना...... ।'

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, जौनपुर उत्तरप्रदेश
मो. 8367782654
व्हाट्सअप 8792257267

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

गधा नहीं बैल पालना चाहिए

कहानी के सम्राट मुंशी प्रेमचंद की दो बैलों की कथा पढ़ रहा था। इस कहानी में इन्होंने बड़े सुन्दर तरीक़े से बैल और गधे के चरित्र का वर्णन किया है। उन्होनें लिखा जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पहले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी- कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है। किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहे गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा।

उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख दु:ख, हानि- लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। उसमें ऋषि मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा होगा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। बेचारे जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लडाई- झगडा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं। फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है और वह है बैल। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते- जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी- कभी मारता भी है, कभी- कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है। अतएव उसका स्थान गधे से नीचा हो। बैल शक्ति में गधे से ज्यादा बलवान होता है। गधा बैल की तरह ही दिनभर कार्य करता है, मगर गधे को वाहवाही नहीं मिलती है, जबकि बैल मालिक का प्रिय होता है। कई मौको पर बैल गधे के हिस्से की घास खा लेता है, मगर बिचारा गधा कुछ नहीं कर सकता। प्रकृति ने भी गधे के साथ बड़ा अन्याय किया है। जहां बैल को बड़े दो सिंग दिए, वहीं गधे को प्रतिरक्षा के लिए सिर्फ पीछे की लात दी, जिसका उपयोग भी वो ढंग से नहीं कर सकता है। बैल के बड़े सिंग देखकर गधा दूर से ही भयभीत रहता है।

इसलिए नीति और आदर्श पालन करके भी गधा हमेशा अन्याय के शिकार होता हैं और बैल मोटी बुद्धि के साथ अपने अड़ियल रवैये से प्रत्येक बाजी अपने पक्ष में कर देता है। बैल से भिड़ने के लिए बैल ही आवश्यक है। बैल उसे उसी की भाषा में जवाब देने में सक्षम होता है। बैल जब सामने बैल को देख लेता हैं, तो सामान्यत अनाधिकृत कुचेष्टा करने से भी बचता है। इसलिए लोगों को मेरी सलाह हैं कि अपने बाड़े में बैल पालना चाहिए, गधे पालने वाला तो हमेशा नुकसान में रहता है।

कविताएं

तेरी यादों के सहारे

तेरी यादों के सहारे, ये जीवन बिता लेंगे,
तुम्हें चाहता हूं, यह दुनिया को बता देंगे।
बस! एक बार मेरी मुहब्बत कर ले कुबूल,
सच कहता हूं, तेरे लिए, जग को धता देंगे।।

बहुत ही शिद्दत से, मैंने तुम्हें प्यार किया है,
कई बार अपनी चाहत का इज़हार किया है।
मुझे अपनी मुहब्बत पर, भरोसा है कायम,
हर रात ख्वाबों में बस! तुम्हें ही जिया है।।

दुनिया वालों के तानो को सह कर जी लेंगे,
मुझे पीना पड़े गरल, हंस कर भी पी लेंगे।
कभी नहीं तुमसे, कोई गिला शिकवा रहा,
तुमने न कह दिया, तो होठों को सी लेंगे।।

एक न एक दिन, तुम्हें मेरी याद तो आएगी,
कहीं देर न हो जाए, तो बहुत पछताएगी।
सच में मुझसे ज़्यादा कोई न तुझे चाहेगा,
मेरी चाहत निश्चित, तुझे मेरी पास लाएगी।।

अच्छा होगा तू मेरी मुहब्बत को दो मेरा नाम,
हमारी चाहत को तेरी मंजूरी मिले इक शाम।
तेरे बिना शायद यह ज़िंदगी अब गवारा नहीं,
तेरा प्यार पाने की हसरत चाहे जो हो
अंजाम।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
कैतहा, भवानीपुर
बस्ती, उत्तरप्रदेश 272124
मो. 7355309428

मंजिल...

मंजिल ख्वाबों की
हर रोज बदलती रही,
जिंदगी मुसाफिर की
तरह चलती रही

एक चिराग ही काफी था
रोशनी के लिए,
फिर क्यूं वहां
बस्तियां जलती रही।

उठा के सर जिसने भी
दुनिया बदलने की ठानी,
अक्सर इनाम में उन्हें भी
सूलियां मिलती रही।

राह तरक्की की जब भी
घोंसलों से निकलती रही,
परवाज पंछियों की
आसमां को खलती रही ।

तन के खड़े थे दिन की
रोशनी में अक्स जिनके,
परछाइयां उनकी भी
शाम को ढलती रही ।

राजकुमार शर्मा
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन

नारी सशक्तिकरण की प्रतीक माजी महाराज सौन्दर्यवती जी

माजी महाराज सौन्दर्यवतीजी द्वारकाधीश की पावन नगरी कांकरोली वल्लभ सम्प्रदाय के पीठाधीश कई महाराज श्री के बारे में व माजी महाराज पदमावतीजी के बारे में हम पिछले अंकों में बता चुके हैं। आज हम एक और विदूषी और न्यायप्रिय माजी महाराज श्रीमती सौन्दर्यवती जी के बारे में बताने जा रहे हैं।

श्री मगनलालजी महाराज की दौहत्री और करणजी, भूपतलालजी की सुपुत्री सौन्दर्यवती का विवाह संवत 1949 आषाढ़ शुक्ल चौथ सोमवार के दिन कांकरोली द्वारकाधीश के महाराज श्री बालकृष्णलालजी के साथ संपन्न हुआ। श्री बालकृष्णलालजी महाराज के और पिता का नाम कल्याणरायजी महाराज जो दाऊजी मदनमोहन के मंदिर में गुसाईजी के छट्ठे पुत्र श्री यदुनाथजी के वंशज थे, श्री बालकृष्णलालजी कांकरोली तृतीय पीठाधीश्वर को तिलकायत श्री गिरधरलालजी महाराज के गोकुलवास हो जाने पर संवत 1935 सन् 1878 में उनके कोई संतान नहीं होने से गोद लेने वाली पुरूषोत्तमलालजी महाराज की धर्मपत्नी पदमावतीजी माजी महाराज थी।

श्री बालकृष्णलालजी महाराज का प्रथम विवाह संवत 1940 चैत्र कृष्ण छठ को पार्वती बहुजी के साथ हुआ था, किन्तु कुछ समय बाद ही पार्वती बहुजी का देहावसान हो गया संवत 1949 में पुन: श्री बालकृष्णलालजी महाराज का विवाह सौन्दर्यवती जी माजी महाराज से हुआ जिनसे उनको चार पुत्र हुए 1- श्री द्वारकेश लालजी संवत 11964, 2- श्री पुरूषोत्तमलालजी संवत 1966, 3- श्री ब्रजभूषण लालजी संवत 1968, 4- श्री विट्ठलनाथजी संवत 1970 पिता श्री बालकृष्णलालजी की उपस्थिति में ही श्री द्वारकेशलालजी व पुरूषोत्तमलालजी लीलास्थ हो गये और कुछ ही समय पश्चात श्री बालकृष्णलालजी महाराज भी लीला में पधार गये। इस तरह कुछ ही समय के अंतराल में आपने दो पुत्रों व अपने पति श्री बालकृष्णलालजी महाराज के लीला में पधार जाने से माजी महाराज श्रीमती सौन्दर्यवतीजी अत्यन्त दु:खी हुई, परन्तु आप बहुत समझदार, कार्यकुशल तथा विदूषी होने से आपने हिम्मत नहीं हारी और ब्रजभूषणलालजी व विट्ठलनाथजी को छोटी उम्र में ढाढस बंधा कर उन्हें कष्ट न होने पावे ऐसा स्नेह दिया। आपने दोनों पुत्रों को सचित्र होने की शिक्षा देने का प्रबन्ध किया। स्त्री की तरह वियोगिनी से जलती पागल नारी सा बर्ताव न कर अपना पुरा प्रयत्न प्रेम में मग्न हो बच्चों को दिया। शिक्षित व गृह कार्य दक्ष की तरह राजकार्य संभाला, बालकों को शिक्षा देने हेतु एक शास्त्री नियुक्त कर मंदिर में ही पाठशाला प्रारंभ कर दी। पुत्रों को ऐसे तैयार किया कि वे गरीब प्रजा के दु:ख दर्द को महसुस कर शुद्ध हृदय से उनके दर्द को दूर करने की भरपूर कोशिश करें न कि अन्य राजा धनिकों की तरह उन्मत होकर प्रजा का अपमान करे। माजी महाराज सौन्दर्यवतीजी ने अपने दोनों ही पुत्रों को सादे जीवन से सरल जीवनयापन करते हुए प्रजा से प्रेम व्यवहार रखने की शिक्षा दी। संवत 1975 वैषाख शुक्ल 3 के शुभ मोहरत पर श्री बालकृष्णलालजी को महाराजश्री की गादी पर बिठाया गया। इस उत्सव में मेवाड़ के तात्कालिक महाराणा श्री फतहसिंहजी कांकरोली पधारे तथा श्रीमती माजी महाराज सौन्दर्यवती जी के सुप्रबन्ध की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उस समय सनवाड़ (कांकरोली) स्टेशन से जो सेवक आये उनके स्वागत व जलपान भोजन की उचित व्यवस्था की गई।

माजी महाराज सौन्दर्यवतीजी की अनुशंषा पर ही श्री बालकृष्णलालजी महाराज ने मुसलमानों को मस्जिद व जैनियों को मन्दिर बनाने की ईजाजत दी। माजी महाराज के रहते ही सनवाड़ रेलवे स्टेशन का नाम कांकरोली रेलवे स्टेशन रखा गया जिसका उद्घाटन मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंहजी के करकमलों द्वारा हुआ। माजी महाराज के प्रोत्साहन से ही कांकरोली में शिक्षा, बिजली व निर्माण कार्यों से एक नई क्रान्ति की शुरूआत हुई। श्री द्वारकेश कवि मण्डल, चित्रशाला व मन्दिर के कई हिस्सों का निर्माण कार्य धर्मशालाऐं व रायसागर (राजसमन्द) में ऐयरोप्लेन का उतरना प्रारम्भ हुआ। स्वास्थ्य सेवाऐं व टेलिग्राम कार्यालय भी माजी महाराज के समय श्री ब्रजभूषणलालजी महाराज ने चालू करवाई।

माजी महाराज सौन्दर्यवती जी के समय को कांकरोली का जनमानस कभी भूल नहीं सकता। उनके कार्यकाल में कई यात्राऐं उठी व कई उत्सव मनाए गये। माजी महाराज के देवलोकगमन के बाद उनके पुत्र श्री ब्रजभूषणलालजी ने उनकी स्मृति में सुन्दर टॉकीज सिनेमा का निर्माण कर यहां की जनता को मनोरंजन का उपहार दिया। हम ऐसे माजी महाराज सौन्दर्यवतीजी को शत-शत नमन करते है।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

धामिणी

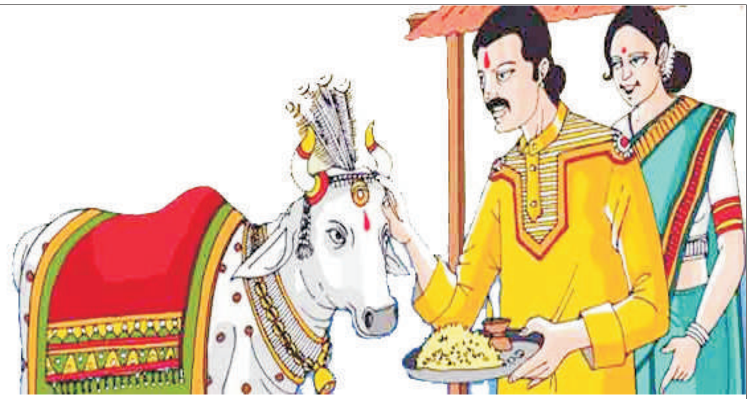

कुछ व्यक्ति विशिष्ट कार्य के लिए पहचाने जाते है। उनमें से एक कार्य है। एकल पशु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। इस कार्य में गांव के घासी बा की सानी नहीं थी। कैसा भी पशु हो स्वयं साथ मीलों चलकर उसे गन्तव्य तक नियत अवधि में पहुंचाने के वो मिसाल थे। आर्थिक रूप से धनी नहीं थे लेकिन सहज सरल विनम्र स्वभाव के धनी थे। घासी बा विशेष कर धामिणी को पहुंचाने का कार्य करने में अपने को सुकून सा महसूस करते थे। धामिणी उस पशु को कहते है जो अपनी बहन या बेटी को मायके से भेंट की जाती थी। धामिणी राजस्थानी शब्द है। धामिणी का विश्लेषण करें तो धा अर्थात् धाय। धाय कहते है जन्म देने वाली मां के अलावा अन्य कोई दुग्ध पान कराने वाली। धामिणी में मां शब्द भी छिपा हुआ है। प्राचीनकाल में लम्बी अवधि तक ससुराल में ही रहने की स्थिति में उस पशु से मां जैसा लगाव लगता था।

धामिणी को जब घर से विदा करते थे उस वक्त एक बेटी की तरह तिलक कंकू, मेहन्दी एवं वस्त्र के रूप में सींगों पर कपड़ा बांधा जाता था। कुछ को तो पूरी ओढ़नी ओढ़ाकर एक अतिरिक्त ओढ़नी देते थे। अतिरिक्त ओढ़नी बेटी पहुंचते पहुंचते धूल मिट्टी से मेली हो जावे तो गांव में प्रवेश पूर्व नई ओढ़नी ओढ़ा दी जाती। धामिणी की विदाई होने पर घर परिवार की सारी महिलाएं परिजन इकट्ठे होकर उसके सिर पर प्रेम, स्नेह, दुलार से हाथ फेरकर यो विदा करते जैसे आज ही बेटी की डोली ससुराल के लिए विदा हो रही है। धामिणी को विदा करते ही लौटते वक्त महिलाएं इतनी भावुक हो जाती कि उनकी पलकें नम हो जाती थी।

धामिणी के नियत गांव में पैदल पहुंचते पहुंचते 2 से 10 दिन लग जाते थे। रास्ते में घासी बा अनेक कठनाईयों को पार करते हुए चारा पानी का जुगाड़ कर के धर कोसां धर मंजला की तर्ज पर चरैवेती चरैवती के रूप में गन्तव्य तक पहुंचते थे। बहन बेटी के यहां घासी बा के पहुंचते ही उस वक्त संचार के साधनों का अभाव होने से बेटी इतनी प्रफुल्लित होती थी कि भावातिरेक में उन्हें ही अपने पिताजी समझ कर धोक देते देते रोने लग जाती थी। सजल नयनों से मायके के सारे समाचार पूछ लेती। घासी बा का स्वभाव ऐसा था कि सभी को पितृछाया सा आभास होता। समाचार सुनने एवं कहने की कला में वो निपुर्ण थे। हर्ष खुशी एवं शोक की बातों को किस तरह किन शब्दों में उतार चढ़ाव से कहना यह तो उनको मानो वरदान था।

बेटी पूछती हां हां घासी बा बोलो मेरे पिताजी ने क्या कहा। घासी बा गला ठीक करते हुए बोलते है- च्उन्होंने कहा कि बेटी फिक्र नहीं करे सुखी रहे। छोटे भाई श्यामू ने भी कुछ कहा क्या ? हां हां आते वक्त वो कह रहा था कि जीजी को कहना कि अगले महीने इस गांव से एक बारात वहां आ रही है। मैं आपसे मिलने उस बारात में आउंगा। आवागमन के साधनों का अभाव होने से बहुत सारे लोग अपनी बहन बेटियों से मिलने के लिए बारात का ही सहारा लेते थे।

हां, घासी बा अब बोलो मां ने क्या बोला ?

घासी बा के होंठ हिलते है लेकिन शब्द हलक में ही अटक जाते है। बोलो न क्या कहा ? घासी बा का ध्यान तो धामिणी के विदाई के पलों की ओर चला गया। गांव के छोर तक मां आई थी। बहुत कुछ कहना चाहती थी लेकिन कुछ नहीं कह सकी। घासी बा ने भरे गले से शान्त होकर बोले- हां मां ने कहा था, हां कहा था कि म्हारी बेटी रे माथे हाथ फेरज्यो।

परिणीता पुत्री व मां के बीच समुद्र समान अथाह भावों को प्रेषण करने की यही एक नौका है। माथे हाथ फेरज्यो ।ञ्इतना सोचते सोचते घासी बा ने बेटी के सिर पर हाथ रख दिया। दोनों के आंखों से अश्रुधारा अविरल फुट पड़ी। इतने में सासूं मां ने आवाज लगाई- बहू घासी बा से बातें करेगी या आवभगत भी करेगी। इधर शाम भी काफी होने लगी थी क्योंकि धामिणी को बेटी के घर बाड़े में बांधने का समय सन्ध्या काल ही उचित माना जाता है। कहते है कि बाड़ा पूरा भरा होता है तब ही नये पशु का प्रवेश होना चाहिए। यदि सुबह के वक्त धामिणी वाहक गांव पहुंच भी जाता तो दिन भर गांव के बाहर रूकता तथा शाम को ही धामिणी को पहुंचाता। रात्रि को खाना के बाद पुन: बहन बेटी घासी बा के पास बैठ जाती। अब गांव के समाचार पूछती कि वो बावड़ी के पास वाली पीपल पर नये पत्ते आ गये होंगे। अमराई के आमों में से कोई आम सूखा तो नहीं। नींव पर इस बार कितनी निम्बोरिया आई, अरे! हां तालाब में पानी तो भरपूर आया होगा। गांव के एक कोने से दूसरे कोने तक सारी जानकारी जुटा ही लेती और घासी बा धीरे-धीरे मंद-मंद मुस्कान के साथ कहते रहते।

उस वक्त बहन बेटी को इतनी तसल्ली होती इतना सुकून मिलता जिसको मापने का कोई पेरामीटर अभी तक नहीं बना। आज के वीडियो कॉलिंग से भी वो सुख नहीं मिलता जो घासी बा की प्रस्तुति से मिलता था। दूसरे दिन प्रात: घासी बा पुन: अपने स्वभाव अनुसार विदा हो जाते थे। हालांकि पत्नी असमय चले जाने से अकेले ही जिन्दगी जी रहे थे। संतान सुख भी ईश्वर ने उन्हें नहीं दिया था। भाग्य के खेल को घासी बा सेवा के खेल से खेल रहे थे। यह कार्य प्रारम्भ करने के बाद उन्हे कभी परिवार की कमी नहीं महसूस हो पाई।

नारायण सिंह 'निराकार'
साहित्यकार, राजसमंद
मो. 94134-23585

Life is all about 'Balance'

"There is no health without mental health." states WHO.

The WHO's definition of health states that it is not merely the absence of disease. Similarly, mental health is not just the absence of mental illness. Physical injury is visible, diabetes is measurable but mental illness can neither be seen nor can be measured.

Around 50% out of 1000 people in India suffers from a mental illness and depression is a leading contributor to the mental health. These people are not mere numbers. The statistics indicate that mental health problems are not just big words in textbooks; they exist in our social circles, in our families and sometimes within us and unfortunately maximum do not knock for support.

That means there is something important missing in the journey of life, something is unaddressed and ignored while shaping the lives. Let's go back to the ones who introduced life mantra, showed the path of life management and moreover set the example by their own lives.

योगस्थ: कुरु कर्मणि सडंग त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धसिद्धयो: समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।
- श्रीमद्भागवत

Lord Krishna defines YOGA so beautifully in the Shrimadbhagwat Gita through a shloka समत्वं योग उच्यते that Yoga is a balanced state. Balanced state of the mind, thought, emotions, behaviour, feelings and intellect.

He asked to stay balanced in all situations, not to be over excited when receiving and neither to be hopeless when something is lost. According to Krishna 'सम भाव' in all situations is known as yoga if this is pleasure or sorrow.

Buddha described the same through 'अष्टह्मंग मार्ग' wherein he used a word 'सम्यक्' which means 'उपयुक्त' or 'उचित'-

1. सम्यक दृष्टि (Right View)
2. सम्यक संकल्प (Right Thought)
3. सम्यक वचन (Right Speech)
4. सम्यक कर्म (Right Action)
5. सम्यक जीविका (Right Livelihood)
6. सम्यक प्रयास (Right Efforts)
7. सम्यक स्मृति (Right Attentiveness)
8. सम्यक समाधि (Right Concentration)

At the same time in Jain religion Mahaveer Swami introduced '**त्रिरत्न**' which are as follows-

- सम्यक ज्ञान (Right Knowledge)
- सम्यक दर्शन (Right Faith)
- सम्यक आचरण (Right Conduct)

All three talked about balance. A balanced life is essential for the harmony of mind and body, staying balanced is simply an art, a practice through which one can become Krishna, Buddha or Mahaveer. Let's start practicing the paths shown by Jagadguru Shri Krishna, Buddha and Mahaveer Swami and contribute to make a difference.

Let's take the responsibility to create a non-judgemental and well-informed atmosphere for individuals struggling with mental illness and of course charity begins at home and so being aware of one's own mental wellbeing paves the path for helping others.

Swami Vivekananda said: "Any action that strengthens the mind is an action worth taking."

Let's take it for those who are suffering, lets take it for all those buds who are still to bloom. Practice of समत्वं योग उच्यते would be enough to recollect, regain and move again.

Wishing you all a balanced life ahead.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International School Nathdwara

सुंदरता ओढ़े बैठा झूठ

सुंदर लड़की खड़ी हो तो टकटकी लगाकर देखने लगते हैं लोग। हर जगह होती हैं सुंदर लड़कियां। घर में भी होती हैं। स्कूल जाती हैं, बाजार में मां बाप के साथ निकलती हैं, सुंदर लड़की।

लड़की सुंदर है, इसलिए सभी देखते हैं। सभी देखने वालों के भाव अलग- अलग होते हैं। वह भी सबको देखती है। उसके भाव माथे पर नहीं बिखरते। उसे मालूम है लोग उसे देख रहे हैं, क्योंकि वह सुंदर है। घर के लोग उसकी सुंदरता से प्रसन्न होते हैं और परेशान भी रहते हैं। सबकी चहेती है सुंदर लड़की। सुंदर है, इसलिए प्रार्थना सभा में मंच पर खड़ा कर दिया जाता है। सुंदर है, इसलिए रिसेप्शन पर बैठती है। सबका स्वागत करती है। उसके शब्दों पर कोई ध्यान नहीं देता है। उसे एक टक देखता है आदमी। आदमी चौंक उठता है, उसके संबोधन से। उसकी भाषा और सुंदर बना देती है। सीमित ठोस ज्ञान उसकी सुंदरता को बढ़ा देता है।

सुंदर है कंप्यूटर की तरह। दिखाई देती है कम्प्यूटर की तरह। वह काम करती है कम्प्यूटर की तरह। उसके कमांड कंप्यूटर की तरह तय हैं। मुस्कराहट सिमट जाती है। वह जोर से ठठाकर नहीं हंस सकती। दौड़ कर प्रिय जनों से गले नहीं मिल सकती। क्योंकि वह सुंदर है। सुंदरता, स्वतंत्रता में बाधक बन जाती है। उसे ध्यान रखना पड़ता है कि वह सुंदर है।

वह शोरूम की चकाचौंध की तरह होती है। शरीफ और बदमाश सभी आकर्षित होते हैं। नीयत में खोट की परख करना उसका काम नहीं। स्वागत करना है, चोर- उचक्कों का भी। हर कोई बात करना चाहता है। पास में बैठना चाहता है। उसे चोर नजरों से देखना चाहता है। वह जानती है, पास में बैठा व्यक्ति, इसलिए सहृदय बनने की कोशिश कर रहा है, क्योंकि वह कुछ देर सुंदर लड़की के साथ रहना चाहता है। वह स्पर्श करना चाहता है। सुंदर लड़की स्पर्श का अर्थ समझती है। स्पर्श हमेशा स्वच्छ ईमानदार भावना का प्रतीक नहीं होता। स्पर्श के कई अर्थ होते हैं। सुंदर लड़की स्पर्श के सभी अर्थ भलीभांति जानती है। इसलिए सुंदर लड़की सीमा तय करती है। किससे, कितनी बात करनी है। किससे कितनी दूर रह कर बात करनी है। किससे कब और कहां बात करनी है।

सुंदरता उसे लोकप्रिय बनाती है, लेकिन स्वतंत्रता के लिए घातक है। सुंदर लड़की स्कूटी पर दस्यु सुंदरी स्वरूप धारण करती है, तो कभी घूंघट ओढ़ती है, तो कभी बुर्का पहनती है या फिर लहंगा चुन्नी पहनकर मुंह को झीने वस्त्र से ढक लेती है। सुंदरता छिपाने के लिए जद्दोजहद करती है। कहीं सुंदरता अभिशाप न बन जाए।

सुंदर टापू की तरह लड़की होती है। टापू पर कौवे और हंस दोनों रहते हैं। एक साफ सुथरा तो दूसरा गंदगी प्रिय। लड़की टापू पर प्रकृति का प्रतीक है। प्रकृति का सौंदर्य मन को शांति प्रदान करता है। कौओं के कारण प्रकृति तहस- नहस और मन व्यथित हो जाता है। कुछ स्थानों पर केवल सुंदर लड़की होती है। होती नहीं है, उन्हें बिठाया जाता है, स्वागत के लिए, संस्थान की गरिमा के लिए विकास के लिए, प्रलोभन भरे आश्वासन देने के लिए। सुंदर लड़की का झूठ बोलना भी, सत्य के समान प्रतीत होता है, इसलिए झूठ सुंदरता का आवरण ओढ़ कर आता है।

झूठ घर से लेकर प्रचार- प्रसार तक सुंदर परिधान में दिखाई देता है। लोग परिधान देखने में, उसमें व्याप्त झूठ को नहीं देख पाते। सत्य बदसूरत होता है। कड़वा भी होता है। सत्य कभी सुंदरता का आवरण नहीं ओढ़ता। वह जैसा है, वैसा ही दिखाई देता है।

समारोह में अहम के झूठ अग्रिम पंक्ति में बैठता है। सत्य को कोई सीट नहीं है। समारोह में सुंदर लड़की को बुलाया जाता है, मंच पर बैठने के लिए नहीं बल्कि अहम के साथ बैठे झूठ को मंच पर स्थापित करने के लिए। सुंदर लड़की अग्रिम पंक्ति में बैठे झूठ को मंच पर बिठा देती है। झूठ सुंदर लड़की घूरता है। सत्य ने कभी सुन्दता को नहीं घूरा। झूठ को सम्मानित करने के लिए सुंदर लड़की मंच पर गुलदस्ता लेकर आती है झूठ सुंदरता को घूरता है। घूरने का अर्थ लड़की समझती है। वह नजरें नीची करके चुपचाप मंच से उतर जाती है। सुंदर लड़की जानती है, सुंदरता उसके लिए कब अभिशाप बन जाएगी। सुंदरता को झीने झूठ से ढंक लेती है। स्कूटी पर बैठ सुंदरता छुपकर निकल जाती है। मंच पर झूठ को स्थापित/ सम्मानित करने के लिए आती है और चली जाती है। सत्य को सम्मान और मंच बड़ी मुश्किल से मिलता है। सुंदरता का काम झूठ को सच बनाकर पेश करना होता।

सुनील जैन 'राही'
व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810 960 285

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल
82338 82818

1. वह देश जिसने 17 नवंबर 2021 को यूनेस्को के कार्यकारी बोर्ड के 2021-25 के कार्यकाल के लिए एक बार फिर से चुनाव जीत लिया है?
2. तेलंगाना के जिस गांव को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव चुना गया है?
3. हाल ही में दिल्ली में स्थित रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए) का नाम जिसके नाम पर रखने की घोषणा की गयी है ?
4. हिंदी की जिस प्रख्यात लेखिका का 90 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है?
5. संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन 2022 की मेजबानी जिस देश को प्रदान की गई?
6. विश्व एथलेटिक्स (World Atheletics) ने जिसको 'वुमेन ऑफ द ईयर' अवॉर्ड से सम्मानित किया है?
7. किस मशहूर फुटबॉलर ने रिकॉर्ड सातवीं बार सर्वश्रेष्ठ फुटबॉलर का Ballon d'Or अवार्ड जीत लिया है?
8. भारतीय सेना में ग्रुप कैप्टन अभिनंदन वर्धमान को जिस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है?
9. राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) का अगला प्रमुख जिस पूर्व खिलाड़ी को नियुक्त किया गया है?
10. किस टीम ने आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड को 8 विकेट से हराकर अपना पहला T-20 World Cup 2021 जीत लिया है?
11. केंद्र सरकार ने 15 नवंबर को बिरसा मुंडा की जयंती को जिस दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है?
12. भारत ने 10 नवंबर 2021 को जो इलेक्ट्रिक वाहन जागरूकता वेब पोर्टल लॉन्च किया है?
13. भारतीय नौसेना को प्रोजेक्ट 75 के तहत चौथी स्कॉर्पीन पनडुब्बी सौंपी है, उसका नाम यह है?
14. केंद्र सरकार ने हाल ही में जिसे अगले नौ सेना प्रमुख के रूप नियुक्त किया है?
15. 'आत्मनिर्भर भारत' के समर्थन में जिस कंपनी ने भारत सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के लिए साझेदारी की है?

उत्तरमाला

1. भारत
2. पोचमपल्ली।
3. मनोहर पर्रिकर
4. मन्नू भंडारी
5. मिस्त्र
6. अंजू बॉबी जॉर्ज
7. लियोनल मेसी
8. वीर चक्र।
9. वीवीएस लक्ष्मण
10. ऑस्ट्रेलिया।
11. जनजातीय गौरव दिवस।
12. ई.अमृत पोर्टल।
13. वेला
14. वाइस एडमिरल आर हरि कुमार।
15. फ्लिपकार्ट।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन

राजस्थानी केणावतां

(1) पीतो– पीतो क्यारो, निकल सासू घर म्हारो।
(2) मती कर बहुवड़ जोरो, सूई लारे डोरो
(3) सासू री सीख फळा तक
(4) सासू स्यांणी, बहु बापड़ी
(5) सासू रौ नाम रूपली, बहु अर माथा ऊपली

सेठ ऊंदरमल रौ बुढ़ापौ अर छोरो छत्तीखोण, पण वीयो भाग देखो। छोरा चांदमल री लाडी चांद मूं चीरै जेड़ी गोरी घट्ट। आस पड़ौस री लगायां वीरां रूप ऊपरे ईसको करें। पाणी पनघट जाता गाम रा मनख लगायां वीरे लारे वातां करें तो वसीला व्हे जावे। कोरोनाकाळ में सेठ ने धांधली चालवा सूं सेठाणी पोळ माथे सुवाड़े दीदो। एक दन छोरो तो बारे गीयोड़ो हो अर घरां सेठाणी मेड़ी माथे पलंग पै पौढ़ीरी, बहु चौमासा री समाई करी री। सेठ पोळ माथे टूटी खाट पै पड्यो– पड्यो धांसी रियो। बारे सूं रामो हीजारी हेलो मार्यो। ओ सेठां! ऊंचे सूं सेठाणी हेटे आई अर आयोड़ा रामा सूं काम पूछ्यो तो वणी रो जवाब हुणर सेठाणी कियो– देख भाया, बापू तो बारे गियो है अर सेठजी कोरोना सूं मांदा है। अणां ने धां घणी चाले जो पोळ माथे हुवाड़ी राख्या है। अबार चोरां रौ हाको घणों है, ये धांसता रै तो रात्यूं चोरी चकारी नी व्हे।

बहू समाई करीन उठी अर बोली– म्हारे घर वाळा सूं काम व्हे तो मुं बताऊं। वे अबार चेना चमार रै जूता गंठावा ग्या है। रामा नै अचम्बो वीयो के सेठाणी सा तो केई रिया है के बापू दुकान ग्या अर लाड़ीसा केवे के चमार रे गिया। अणां ने ठा कस्यान पड़ी। सासूं बोली– म्हारी बहू नमोकार रो मंत्र रो जाप करें। जीसूं अणीने सब ठा पड़ जाया करें। या तो पर्युषण में रातभर जाप करें। सासूं जी तपाक सा बोल पड्या– देख रामा वे आई रीया बापू। सेठ रो छोरो बोल्यो, मुं ग्यो तो दुकान हो, पण जूता गंठावा परो ग्यो। हीजारी वणीने देख ने आपणा काम ने केवणो तो भूल ग्यो अर केवा लागो सांची है, रोगी, भोगी, योगी अर लोभी ने नींद नी आवे। आज म्हारी हमझ में पाकी आई गी।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
मंदिर मार्ग, कांकरोली, राजसमंद
मो. 99286-25757

पुस्तक समीक्षा

मुरलीधर कनेरिया 'स्नेहिल' के 'सुलगते सवाल'

आज की कविताएं किसी व्यक्ति की प्रशंसा या गुणगान तक सीमित नहीं रही है। ह्रदय में उठने वाले हर सवाल का जवाब चाहने वाले जब कलम दवात ले कागज पर लिखने लगते हैं, तो कविता, गजल, छंद, कहानी, नाटक, उपन्यास, लेख आदि मूर्त रूप ले लिखने वाले को साहित्यकार का दर्जा देते हैं।

मुरलीधर कनेरिया भी ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने आसपास के परिवेश में जो कुछ भी विसंगतियां देखी उन्हें कागज पर लिखकर कविताओं का रूप प्रदान किया और द्रुत गति से कविताएं लिखना प्रारंभ किया जिस व्यक्ति ने कुछ ही वर्षों पूर्व राजस्थान साहित्यकार परिषद की सदस्यता ग्रहण की और धड़ल्ले से प्रतिवर्ष अपनी कविताओं की पुस्तकों का विमोचन करता रहा, किसी वर्ष तो दो दो कविताओं की पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। लोकार्पण समारोह में प्रांत व देश के प्रख्यात साहित्यकारों की उपस्थिति में आपकी पुस्तकों की कविताओं पर आलेख पढ़े गए उन कविताओं को सराहा भी गया और जल्द ही कई साहित्यिक संस्थाओं ने आपको पुरस्कारों से नवाजना प्रारंभ कर दिया। पुरस्कारों की संख्या इतनी लंबी है कि उनका यहां उल्लेख करना संभव नहीं है पर आपकी पुस्तकों में उसका उल्लेख जरूर मिल जाएगा। मुरलीधर जी कनेरिया राजस्थान साहित्यकार परिषद के अध्यक्ष पद पर भी रहे। उनके कार्यकाल में संस्थान में कई साहित्यिक आयोजन हुए। आप के कार्यकाल में परिषद का वन भ्रमण, पिकनिक, अब तक यादगार बना हुआ है आप प्राकृतिक वातावरण में भ्रमण व स्नेह भोज के बड़े शौकीन थे।

सुलगते सवाल कविता की पुस्तक में 35 कविताएं विभिन्न सुलगते सवालों से रूबरू कराती है रक्षाबंधन, दरिंदगी, नजर, प्रेम, अन्ना नहीं अब आंधी है, खुद को बदलें, प्यार, गैंगरेप, जन-जन का दर्द, जीवन की दौड़ भाग, पानी की पुकार, जैसी कविताओं में भोगा हुआ सच और अपने परिवेश का सच उजागर होता है। वही संवेदनशीलता कविता में कवि लोगों को अपने कर्तव्य निभाने की प्रेरणा देता है। वतन की खुशहाली के लिए संकल्प कविता में लोगों को कर्तव्य बौद्ध की याद दिलाते हुए वतन के लिए कुछ कर गुजरने का संकल्प दिलाता है।

लोगों से मिली जानकारी के अनुसार कवि स्नेहिल शुरू से ही राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत और वतन के प्रति निष्ठावान रहे हैं इसीलिए एनसीसी में आपने कार्य प्रारंभ किया और वर्षों तक एनसीसी में कमीशंड ऑफिसर पद पर रह देश सेवा में जुटे रहे बालकों में एनसीसी के प्रति आकर्षण पैदा कर अधिक से अधिक बच्चों को एनसीसी से जोड़ बालकों में राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की भावना जगाते रहे। सेवा निवृत्ति के बाद जो आपने लेखन का कार्य प्रारंभ किया वह भी किसी भी सूरत में कम नहीं है। इतने कम समय में आपने 10 कविताओं की पुस्तकें लिख लोगों में समाज के प्रति अपने कर्तव्य का बोध कराया, अभी एक पुस्तक आपकी प्रेस में गई हुई है जो जल्दी ही पाठकों तक पहुंच जाएगी।

पर यह क्या....! दिनांक 25 अगस्त 2021 को ह्रदय गति रुक जाने पर वह अपने भरे पूरे परिवार को छोड़ इस दुनिया को अलविदा कह गए ऐसे ओजस्वी वह राष्ट्र प्रेमी कवि को भावभीनी श्रद्धांजलि

अफ़ज़ल खा अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की कांकरोली
मो. 98284-75288

परियों की रानी की डोली

चार कहार अपने कांधों पर उठाए सजी हुई पालकी में घूंघट ओढ़े बैठी दुल्हन को राजमहल की तरफ बढ़े जा रहे थे। सत्ता के कदम डगमगाते झूमते जश्न मनाते मौज मस्ती में राजधानी की मुख्य सड़क पर बढ़ते चले जा रहे थे। आगे पीछे दाएं बाएं चारों तरफ सुरक्षा का घेरा कायम था सत्ता सुंदरी मदिरा का सरूर हल्का हल्का पूरी राजसी बरात पर असर दिखला रहा था। डोली मयकदे से परियों की रानी को लेकर चली चलती जा रही थी। शासन को अपनी शान बढ़ानी थी राज्य भर में शहर शहर गांव गांव गली कूचे में बहु बेगम का ठिकाना बनाया हुआ था। तरह तरह की मय की बोतल कितने रंगीन परिधान पहने मचलती सी आगोश में आने को नज़दीक खींचती लगती थी। लोग दो घूंट मुझे भी पिला दे साकी कहते अपने पर्स से नोटों को निकाल डोली पर फैंकते पैसों की बारिश हो रही थी। शराब खराब नहीं होती कभी भी शराबी नाहक बदनाम हैं। न-तज़रबा-कारी से वाई ज़ की हैं ये बातें, इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है। अकबर इलाहाबादी फरमाते हैं। शराबी फ़िल्म देखने वाले अभिनेता को इतना चाहते हैं कि ऊंचे आसमान पर बिठा देते हैं। बड़ी मुबारिक चीज़ है माना कि बहुत बदनाम है ये, छू लेने दो नाज़ुक होंटों को, कुछ और नहीं है जाम है ये। कुदरत ने जो हमको बख़्शा है वो सबसे हसीं इनाम है ये। साहिर लुधियानवी जी फरमाते हैं। राजकुमार अभिनेता की बात ही अगल थी जानी हम वो हैं जो शीशे से पत्थर को तोड़ते हैं। झूठ नहीं कहता ये दुनिया कभी इतनी खूबसूरत और रंगीन नहीं होती अगर शराब मयकदा साक़ी और पीने वाले नहीं होते। जन्नत की चाहत लोग परियों और शराब की आरज़ू में करते हैं मरने के बाद जीते जी प्यासे रहते हैं।

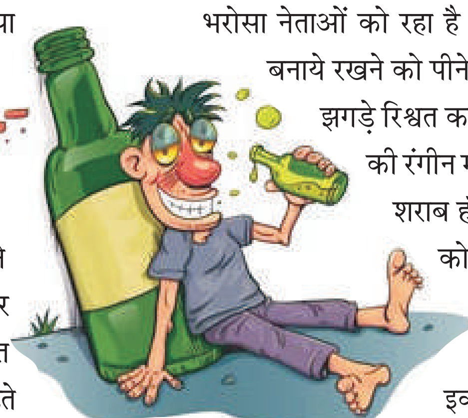

शराब का नशा कुछ पल का नशा है असली नशा मुहब्बत का होता है जो हर किसी को नसीब नहीं होता है। महंगी सस्ती होने से कोई फर्क नहीं पड़ता है पीने वाला और पिलाने वाले का अंदाज़ तौर तरीका कैसा है अंतर उस में है। मैं खुदा का नाम लेकर पी रहा हूं दोस्तो ए ज़हर भी इसमें अगर होगा दवा हो जाएगा। बशीर बद्र जनाब कहते हैं। शायरी और शराब साकी और मयखाना इनका रिश्ता कमल का होता है। शराब से बढ़कर कोई साथी नहीं हो सकता इक यही है जो ख़ुशी को कई गुणा बढ़ाती भी है और हज़ारों ग़म को भुलाती भी है। महान शायर कह गए हैं जिसको शराब मिल जाये उसको कुछ और क्यों चाहिए बस यही खुद इंतज़ाम करना पड़ता है बाकी सब ऊपरवाला खुद देता ही है। सरकार शराब के सहारे ज़िंदा रहती है चुनाव लड़ने से सरकारी खज़ाने भरने तक बस उसी का भरोसा नेताओं को रहा है। अधिकारी कर्मचारी आपसी भाईचारा बनाये रखने को पीने पिलाने के दौर चलाते रहते हैं दफ़्तर के झगड़े रिश्वत का बटवारा की तकरार खत्म होती है शाम की रंगीन महफ़िल में जाम से जाम टकराते ही।

शराब हौंसला बढ़ाती है नशे में आदमी असंभव को संभव कर दिखाता है। बुज़ूर्ग सुनाया करते थे इक बादशाह रात को हाथी पर शहर का मुआयना करने निकला तो इक शराबी ने नशे में पूछा बताओ ये हाथी कितने का दोगे मुझे खरीदना है मुंह मांगे दाम दूंगा। बादशाह ने सुबह दरबार में बुलाया और पूछा बताओ क्या कीमत लगाओगे मेरे हाथी की। उसने जवाब दिया सरकार रात वाले व्यापारी चले गए, अब सौदा नहीं हो सकता है। शराब का नशा दौलत शोहरत ताकत सत्ता अहंकार का नशा उतरता है तो अपनी औकात पर पहुंच जाते हैं। सभी अन्यथा है कोई पूछता है तेरी औकात क्या है यानि बंदा नशे में है। मुझको यारो माफ़ करना मैं नशे में हूं।

डॉ. लोक सेतिया
मॉडल टाउन फतेहाबाद
हरियाणा 125050
मो. 9416792330

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए
3 वर्ष	36	720	220	500 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

धरती माता

जो केवल देना जानती है
लेना नहीं
क्या उसके प्रति हमारा
कर्त्तव्य कुछ नहीं है ?

ये कल कल करते
पहाड़ों से छलांगे लगाते झरने
बलखाती उफनती नदियां
ये उच्च पर्वत शिखर
याद दिलाते है
हम भूमि पुत्र है
माँ का ऋण चुकाना है
झरनों को बचाना है
नदियों को बचाना है,
पहाड़ों और घाटियों को बचाना है
और इनमें विचरण करने वाले
उछलते कूदते
जमीन तलाशते
आसरा ढूंढते
भूख से बिलबिलाते
फर्राटे भरती, घुर्राती बेपरवाह गाड़ियों
से
हेरान, परेशान
कुछ बचे खुचे
निरीह वन्य पशुओं को
बचाना है।

डॉ. देवकीनन्दन नन्दवाना
गणेश नगर
कांकरोली, राजसमंद

रसनादेवी

मैं तनरूपी वन में वास करने वाली देवी हूं।
मेरा नाम है-रसनादेवी।
मेरा कद तो बहुत छोटा है फिर भी
पूरे तनरूपी वन पर राज करती हूं।
तनतंत्र की सारी व्यवस्था मुझ पर निर्भर करती है।
मैं बहुत बड़ी नृत्यांगना हूं।
जब रौद्र रूप धारण कर नृत्य करती हूं
तब तनतंत्र की व्यवस्था में व्यवधान पैदा कर देती हूं।
जब सौम्य रूप धारण कर नृत्य करती हूं
तब चारों ओर आभामंडल रचा देती हूं।

मैंने ही कैकेई के कान भरकर मर्यादा पुरुषोत्तम को
अयोध्या से चौदह साल के लिए निर्वासित कर दिया था।
मैंने ही दुर्योधन को अंधा कहकर
हस्तिनापुर में महाभारत रचा दिया था।
मैंने ही मन से हारे अर्जुन को गीता सुनाकर
धर्म की रक्षा हेतु लड़ने के लिए तैयार किया था।
मैंने ही तुलसीदास की अंतरात्मा को जगाकर
रामचरितमानस का निर्माता बना दिया था।

मेरे दो रूप हैं।
मैं अमावस्या भी हूं और पूर्णिमा भी हूं।
मैं रौद्र भी हूं और सौम्य भी हूं।
मैं विष प्याला भी हूं और अमृत कलश भी हूं।
मैं विनासिनी भी हूं और निर्मात्री भी हूं।

समीर उपाध्याय
मनहर पार्क 96/ए, चोटीला-363520
जिला- सुरेन्द्रनगर, गुजरात
मो. 9265717398

ताज

ताज की इस छवि में,
आंसुओं को देखता हूं मैं।

शोषण के इस सदन में
शोभा उस मुमताज की।
शाहजहां के उस प्रेम में,
जख्म लहू के ढूंढ़ता हूं मैं।

ताज की इस छवि में
आंसुओं को देखता हूं मैं

शाही दौलत के नशे से
थी निर्धनों की एक मजाक।
उन शहीदों की कब्र से,
रूदन उनका सुनता हूं मैं।
ताज की इस छवि में
आंसुओं को देखता हूं मैं।

जब तक रहेगा जमी आसमां,
होंगे कई शाह पैदा।
क्रूर हत्यारे की तस्वीर में,
कफन उनके ढूंढता हूं मैं।
ताज की इस छवि में,
आंसुओं को ढूंढता हूं मैं।

मेहनत करो ओ सपूतों,
शत शत प्रणाम तुम्हें।
श्वेत हिम परिधान से,
रूदन उनका सुनता हूं मैं।
ताज की इस छवि में,
आंसुओं को ढूंढता हूं मैं।

धनसुख बोल्या
साहित्यकार, कांकरोली

पुस्तक समीक्षा

वरिष्ठ साहित्यकार के जीवन संघर्ष और रचना-धर्मिता के प्रमाणों का जीवंत संचयन और तटस्थ प्रस्तुतीकरण

समीक्षित कृति 'क़मर मेवाड़ी रचना संचयन'

व्यक्तित्व के साथ कृतित्व को विश्लेषित करने वाली गवेषणात्मक कृति कहूंगा। इस कृति को मैं एक प्रायोजना के रूप में देखता हूं। यह प्रायोजना भले ही पृष्ठों पर न उकेरी गई हो परंतु, मानस और चित्त के फ़लक पर खूब चमकीली भावनाओं और विचारों के साथ अंकित होकर साकार रूप के साथ पूर्ण हुई है। यह वह महत्वपूर्ण कृति भविष्य में उन-उन हाथों में रहेगी जो क़मर मेवाड़ी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को जानना और समझना चाहते हैं।

'क़मर मेवाड़ी रचना संचयन' कृति के सम्पादक माधव नागदा का संपादकीय- 'कमर मेवाड़ी, साहित्यिक पत्रकारिता का कीर्ति स्तम्भ' के शीर्षक से है। यह शीर्षक सम्पूर्ण रूप से इस कृति के प्रकाशन के उद्देश्य और सार-स्वरूप को स्पष्ट करने वाला है। प्रस्तुत सम्पादकीय मनोहारी शिल्प के साथ पाठकों को इस कृति से जोड़ने में जादुई सामर्थ्य रखता है। प्रसिद्ध साहित्यकार क़मर मेवाड़ी के व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति उनकी क्या अनुभूति रही उसे बहुत ही साफ तरीके से अभिव्यक्ति किया है। कृति का प्रारम्भ आत्मकथ्य से ही होता है। जिसमें दो आलेख क़मर मेवाड़ी जी के हैं। क़मर मेवाड़ी अपने इन दोनों आलेखों में ईमानदारी से अपने जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालते हैं। जब कोई लेखक अपने अतीत को चलचित्र की भांति स्वयं प्रदर्शित कर रहा हो तब उनको समझने में और उनकी रचना-प्रक्रिया को जानने में अत्यंत सहूलियत हो जाती है। मानना यह भी है कि किसी भी रचनाधर्मी के व्यक्तित्व और उसके परिवेश का उसकी रचना-प्रक्रिया पर सीधा-सीधा प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह अंश रचनाओं में परिवेशगत दृश्यों की यथार्थ अनुभूति का प्रमाण प्रस्तुत करता है। साहित्यकार के कवि-समय के लिए प्रवृत्तिगत राय-शुमारी के निर्धारण में सूत्रबद्धता का काम करता है। कृति-संपादक माधव नागदा का यह चिंतनपरक चरण स्तुत्य है। इसी चरण में पाठकों को ज्ञात होता है कि क़मर मेवाड़ी कब से लिखने लगे और क्यों कर लिखने लगे ? क़मर मेवाड़ी जीवन के नौवें दशक में प्रवेश के बाद भी आज निरंतर लिखते चले जा रहे हैं। आपका लेखन भी विविधता को लिए हुए हैं। देश की सर्व मान्य प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हुए आज भी आप अपनी उपस्थिती दर्ज करा रहे हैं।

कृति का दूसरा चरण 'व्यक्तित्व की खुशबू' अभिधान से प्रस्तुत होता है। जिसमें देश के सुप्रतिष्ठित कवि, कथाकारों, संस्मरण

एवं डायरी लेखकों सहित अनेक साहित्यकारों, समालोचकों के क़मर मेवाड़ी जी के व्यक्तित्व को केन्द्रित कर संस्मरणात्मक आलेख प्रकाशित हैं। ये सभी क़मर मेवाड़ी जी के जीवन के छठवें दशक की संपूर्ति पर या उसके आस-पास के रचित हैं। डॉ कृष्ण कुमार 'आशु' और नन्द चतुर्वेदी जी ने कम-ज्यादह ही सही कृतित्व पर भी संकेत किए हैं। जिसे क़मर मेवाड़ी जी के मित्र-भाव की पुष्टि के साथ.साथ उनकी दृढ़ सामाजिक-संपृक्ति का भी पता लगता है। हम क़मर मेवाड़ी जी के जीवन-संघर्ष, पारिवारिक संस्थितियां और सामाजिक परिवेश को इस चरण से बख़ूबी समझ और जान सकते हैं। निरंतर साहित्य के समंदर में मूल्यों के अन्वेषण और उनकी प्रतिष्ठा के लिए ततत्पर अनुभव करते हैं। साथ हीए 50 वर्षों तक अकेले सम्बोधन के प्रकाशन का दायित्व क़मर मेवाड़ी जी द्वारा निर्वहन करते रहने के लिए ना जाने कितने संघर्षों में परिवार को भी भागीदार बनाते रहे होंगे। यह भी यहां स्पष्ट हो जाता है।

कृति का तीसरा चरण 'सृजन का आलोक' संज्ञा से अभिहित है। जिसमें संपादक ने क्रमश: चयनित कहानियां, उपन्यास अंश, प्रतिनिधि कविताओं, संस्मरणों को स्थान दिया है। यह समग्र साहित्य का वह प्रतिनिधि विधागत अंश है। जिस के द्वारा क़मर मेवाड़ी के विपुल साहित्य की तरफ पाठक वर्ग प्रेरित और आकर्षित रहेगा। पाठकों, साहित्य-प्रेमियों और शोधार्थियों के लिए कई वातायन खुल गए हैं। इन वातायनों से वे जान सकेंगे कि क़मर मेवाड़ी जी के साहित्य-संसार का प्रसार कितना कुछ है।

कृति का चतुर्थ चरण 'कसौटी पर कृतित्व' के नाम से प्रस्तुत किया गया है। इस में कहानी पर डॉ. मलय पानेरी, डॉ. मंजु चतुर्वेदी, डॉ. कुन्दन माली, शहनाज़ पठान की महत्वपूर्ण समीक्षाएं हैं। कविता पर डॉ. गोपाल शर्मा 'सहर' राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सवाई सिंह

शेखावत, डॉ रमाकांत शर्मा, डॉ. रमेश मयंक, त्रिलोकी मोहन पुरोहित, विजेंदर अनिल और पंकज मिश्र की प्रभावी समीक्षाओं को संकलित किया गया है। उपन्यास पर डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ और वेद व्यास जी की समीक्षाएं प्रस्तुत की गई हैं। संस्मरण विधा को लेकर डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवालए डॉ. प्रेमकुमार, राम निहाल गुंजन, डॉ. हुसैनी बोहरा की समीक्षाएं सम्मिलित की गई हैं। ये समस्त समीक्षाएं देश के नामवर हस्ताक्षरों की हैं, जो अपनी-अपनी दृष्टि से क़मर मेवाड़ी जी के साहित्य पर अपनी राय रखते हैं। प्रस्तुत समीक्षाएं समग्र रूप से क़मर मेवाड़ी के कृतित्व को सुस्पष्ट कर देती हैं। यहां एक बात जरूर उभर कर आती है कि क़मर मेवाड़ी जी ने अपने जीवन में छह दशक में जो भी साहित्य रचा उसमें किसी एक विचार-धारा में अपने आप को सीमित नहीं होने दिया। प्रगतिवाद, समाजवाद, मानवतावाद के साथ दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श आदि के साथ समकालीन साहित्यिक मूल्यों को सहेजते चले आ रहे हैं। ये समीक्षाएं अपनी जगह हैं। इन में प्रवृत्तिगत विचार भी समीक्षकों के अपने निजी अनुभूति पर आधारित हैं। कई विश्व विद्यालयों के शोधार्थी शोध कर चुके हैं। कुछ कर भी रहे हैं। यह सब तो होता रहेगा। लेकिन, साहित्यिक मित्रों को इसमें अपनी चिंतना, दृष्टि और विवेचनात्मक प्रतिभा का निवेश करना इस दिशा में अभी भी मुझे आवश्यक अनुभव होता है।

'क़मर मेवाड़ी रचना संचयन' कृति का पंचम चरण 'विचारों का ताप' शीर्षक से समलंकृत है। जिसमें नरेंद्र निर्मल, माधव नागदा और अवध बिहारी पाठक द्वारा क़मर मेवाड़ी जी से लिए साक्षात्कार हैं। इस अंश से क़मर मेवाड़ी के व्यक्तित्व के साथ उनके कृतित्व और सम्बोधन के संपादकीय कर्म पर प्रकाश स्वत: प्रस्फुटित होता है। यह चरण क़मर मेवाड़ी के व्यक्तित्व के अंतर और वैचारिकी का प्रस्फुटन कह दें तो उचित ही होगा।

समीक्षित कृति का छठवां चरण सम्बोधन का साहित्यिक पत्रकारिता में स्थान को सुस्पष्ट रेखांकित करता है। इस अंश में देश भर की साहित्यिक पत्रकारिता में सम्बोधन को लेकर प्रकाशित चर्चाएं विचार और आलेख संकलित हैं। यह अंश सम्बोधन की निरंतर आधी शती तक होने वाली धमक को अनुभव कराती है। पांच दशक तक किसी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन करना और अपनी रचनाधर्मिता को निरंतर बनाए रखने के साथ-साथ अद्यतन बनाए रखना बहुत उल्लेखनीय और अभिनंदनीय प्रवृत्ति है। वरिष्ठ मित्र वर्ग भी इस बात को अनुभव करते रहे हैं कि सम्बोधन को समय के साथ-साथ वैचारिकी एवं सामग्री के स्तर पर उसे नव्यता देते रहे। इसी के कारण सम्बोधन के कई विशेषांक आज भी उल्लेखनीय हैं। क़मर मेवाड़ी की सम्बोधन के प्रति और अपनी रचनाधर्मिता के प्रति अद्यतनता को बनाए रखने से ही सम्बोधन के लिए कभी रचनागत अभाव अनुभव नहीं हुआ। यह वह कारण विशेष भी रहा है जो सम्बोधन को देश और देश के बाहर साहित्यिक संसार में समादृत दृष्टि से देखा और पढ़ा जाता रहा है।

इस कृति के अंत में परिशिष्ट के रूप में क़मर मेवाड़ी जी का समग्र परिचय प्रस्तुत कर माधव नागदा जी ने पाठकों, साहित्य-सेवियों और शोधार्थियों के लिए राजपथ ही बना दिया। इस अंश को लोकार्पित कृति की प्रायोजना के सातवें चरण के रूप में देखता हूं।

अस्तु, निश्चित ही यह कृति आदरणीय क़मर मेवाड़ी के व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने-समझने और उनसे आत्मिक ग्रंथि-बंधन करने-कराने के लिए पवित्र सप्तपदी -सी कहूंगा। निश्चय ही 'क़मर मेवाड़ी रचना संचयन' -वरिष्ठ साहित्यकार के जीवन संघर्ष और रचना-धर्मिता का माधव नागदा द्वारा प्रमाणों का जीवंत संचयन और तटस्थ प्रस्तुतीकरण करने वाली समर्थ कृति है जिसका साहित्य-संसार मेन जबर्दस्त स्वागत होगा। भाई माधव नागदा जी को इस समर्थ कृति के सम्पादन हेतु हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
वरिष्ठ साहित्यकार, व समीक्षक
शाति कॉलोनी, कांकरोली, राजसमंद (राज.)
संपर्क-सूत्र - 9414174179, 8955371012

कुंवारा महासंघ का एक प्रार्थना पत्र

सेवामें,

श्रीमान जी

नई दिल्ली

विषय : पुरुषों के विवाह की अधिकतम आयु तय करने के संदर्भ में।

मान्यवर

भारत के कुंवारा महासंघ की ओर से आपका अभिनंदन करते हुए निवेदन है कि पुरुषों की असहाय अवस्था पर भी ध्यान दिया जाए। उनके विवाह की अधिकतम आयु तय कर दी जाए। वह उम्र पार करते ही उसके नाते- रिश्तेदार, परिवार और प्रेमिकाओं को कानूनन सजा दी जाए। एक आदमी बेचारा अपना घर बसाने के लिए क्या- क्या नहीं करता? सोलह पार करते ही वह प्रेम पत्र लिखने लग जाता है, जो कि एक नि:स्वार्थ कर्म है। इसमें फल की इच्छा किए बगैर अड़ोस- पड़ोस, मेले- ठेले में सबमे बंगाली बाबा का ताबीज बांधकर फेंकता है ताकि एक अदद कन्या का दिल पसीज जाए और कुंवारेपन की गाड़ी की जंजीर खींची जा सके। यही एकमात्र क्रिया है, जिसके बराबर प्रतिक्रिया नहीं होती। थप्पड़, जूते, डंडे खाकर मर्दों की प्रजाति अपने माथे पर शिकन नहीं आने देती और दुगुने उत्साह के साथ प्रेमपथ पर चलायमान रहती है। दर्जन दो दर्जन बार हड्डियों और दिल को तुड़वाकर वह समझ जाता है कि विवाह के लिए नौकरी करनी पड़ेगी।

वह बेचारा कलक्टर की तैयारी से आरंभ करता है और क्लर्क की कुर्सी तक पहुंचता है। सैकड़ों बार फार्म भरकर मुस्कराते हुये फेल होने के लिए भी कोलंबस का ज़िगर चाहिए। आंखों पर चश्मा चढ़े तो चढ़े, बालों में सफेदी उतरे तो उतरे, घुटने बजने लगें, दांत हिलने लगें लेकिन वाह रे वीर कर्मपथ का त्याग नहीं करता। यदि मुहम्मद कासिम होता तो ऐसे लड़ाकू को अपना घोड़ा देकर चला जाता। चालीस की अवस्था पूरी करते- करते वह कहीं मास्टर होकर पति होने की दावेदारी ठोकने लगता है। दो- चार सक्षात्कारों से गुजर कर आखिरकार वह पति बनकर अपने को प्रारंभिक पांच वर्षों तक परमेश्वर मानता रहता है। उसके बाद तो सब जानते ही हैं।

महोदय, यह कानून बनाया जाए कि

1. अधिक उम्र के प्रेमी को प्रेम में वरीयता दी जाएगी।
2. बुजुर्ग दुल्हे की शादी का आधा खर्च सरकार उठाएगी।
3. घोड़ी, टेंट और बाजा नि:शुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।
4. मौका-ए-शादी पर एक स्पेयर दुल्हा भी रखा जाएगा, ताकि घोड़ी पर चढ़ते या उतरते समय यदि दुल्हा घुटने खो बैठे या अल्लागंज कूच कर जाए तो भी जश्न न रुके।
5. प्रेमी यदि प्रेम में काम आ जाए तो उसकी मूर्ति प्रेमिका के घर के आगे लगाई जाए।

आपका मित्र

सचिव

कुंवारा महासंघ भारत

शशि कान्त सिंह शशि

बिहार

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

कौनसा धर्म श्रेष्ठ ?

एक राजा हुआ, उसने दूर- दूर खबर की कि जो भी धर्म श्रेष्ठ होगा, उसे मैं स्वीकार करूंगा। अनेक- अनेक पंडित आए, समझाते थे कि हमारा धर्म श्रेष्ठ है, दूसरा पंडित समझाता कि हमारा धर्म श्रेष्ठ है। वे विवाद भी करते, एक- दूसरे को हराने और पराजित करने की कोशिश भी करते। लेकिन राजा के सामने कुछ सिद्ध न हो पाया कि कौन धर्म चरम धर्म है, कौन सर्वोत्कृष्ट धर्म है और जब यही सिद्ध न हुआ तो राजा अधर्म के जीवन में जीता रहा। उसने कहा, जिस दिन सर्वश्रेष्ठ धर्म उपलब्ध हो जाएगा, उस दिन मैं धर्म का अनुसरण करूंगा।

जब तक सर्वश्रेष्ठ धर्म का पता ही नहीं है, तो मैं कैसे जीवन को छोड़ूं और बदलूं! तो जीवन तो वह अधर्म में जीता रहा, लेकिन सर्वश्रेष्ठ धर्म की खोज में पंडितों के विवाद सुनता रहा। सभी धर्मों के लोग आए और किसी भी धर्म का आदमी आया। उसने कहा, मेरा धर्म श्रेष्ठ है, दूसरों के नीचे हैं। राजा उनकी दलीलें सुनता, दूसरों को आमंत्रित करता, उनकी दलीलें सुनता। ऐसे जीवन बीता। जीवन तो है छोटा और दलीलें तो हैं बड़ी। तो दलीलों में तो जीवन बिलकुल बीत ही सकता है, कोई कठिनाई नहीं है।

फिर तो राजा बूढ़ा होने लगा और घबरा गया कि अब क्या होगा? अधर्म का जीवन दुख देने लगा, पीड़ा लाने लगा। लेकिन जब श्रेष्ठ धर्म ही न मिले तो वह चले भी कैसे धर्म की राह पर? अंतत: एक फकीर उसके द्वार पर आया और उस फकीर ने कहा कि मैंने सुना है कि तुम पीड़ित हो और परेशान हो। तुम्हारे चेहरे से भी दिखाई पड़ता है।

उस राजा ने कहा, मैं सर्वश्रेष्ठ धर्म की खोज में हूं।

फकीर ने कहा- सर्वश्रेष्ठ धर्म! क्या बहुत धर्म होते हैं दुनिया में कि उसमें कोई श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ का भी सवाल उठे? धर्म तो एक है। कोई धर्म बुरा और कोई धर्म अच्छा, यह तो होता ही नहीं, तो सर्वश्रेष्ठ का कोई सवाल नहीं। राजा बोला, लेकिन मेरे पास तो जितने लोग आए उन्होंने कहा, हमारा धर्म श्रेष्ठ है।

उस फकीर ने कहा- जरूर उन्होंने धर्म के नाम से, मैं श्रेष्ठ हूं, यही कहा होगा। उनका अहंकार बोला होगा। धर्म तो एक है, अहंकार अनेक हैं। राजा से उसने कहा कि जब भी कोई पंथ से बोलता है या किसी धर्म से बोलता है, तो समझ लेना कि वह धर्म के पक्ष में नहीं बोल रहा। अपने पक्ष में बोल रहा है और जहां पक्ष है, जहां पंथ है, वहां धर्म नहीं होता। धर्म तो वहीं होता है, जहां व्यक्ति निष्पक्ष होता है। पक्षपाती मन में धर्म नहीं हो सकता।

राजा प्रभावित हुआ। उसने कहा, तो फिर तुम मुझे बताओ मैं क्या करूं?

उस फकीर ने कहा कि आओ नदी के पार चलें, वहां मैं बताऊंगा। वे नदी के किनारे गए। उस फकीर ने कहा कि जो सर्वश्रेष्ठ नाव हो तुम्हारे राजधानी की वह बुलाओ, तो उसमें बैठकर उस तरफ चलें। राजा ने कहा, यह बिलकुल ठीक। राजा जाए तो सर्वश्रेष्ठ नाव आनी चाहिए। बीस- पच्चीस जो अच्छी से अच्छी नावें थीं वे बुलाई गईं। सुबह वे गए थे, दोपहर इसी में हो गई, सब नावें इकट्ठी हुईं। अब वे घाट के किनारे भूखे बैठे हुए हैं और वह फकीर भी अजीब था, एक- एक नाव में दोष निकालने लगा कि इसमें यह खराबी है, इसमें यह दाग लगा हुआ है, यह तो आपके बैठने योग्य नहीं है। इसमें मैं कैसे बैठ सकता हूं, यह तो बहुत छोटी है।

राजा भी थक गया, सांझ हो गई, सूरज डूबने लगा। राजा ने कहा- क्या बकवास लगा रखी है। नाव कोई भी काम दे सकती है और अगर नाव कोई भी पसंद नहीं पड़ती तो नदी भी कोई भारी नहीं, चलो हम तैर कर ही निकल चलें। छोटी सी नदी है, अभी कभी के उस तरफ पहुंच गए होते।

फकीर जैसे इसकी प्रतीक्षा में ही था, उसने कहा- मैं इसी की प्रतीक्षा में था। तुम्हें जीवन में यह खयाल नहीं आया कि धर्मों की प्रतीक्षा क्यों कर रहे हो, तैरकर भी निकला जा सकता है और सच तो यह है कि धर्म की कोई नाव नहीं होती।

ओशो, समाधि कमल-15

ग्रीन पटाखे : प्रदूषण रहित उत्साह और उल्लास का वातावरण

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर लेखक एवं कवि
कांकरोली, राजसमंद 9784652469

उत्सव और त्यौहार हमारी परंपरा के प्रतिनिधि हैं। यह हमारे जीवन में नया जोश उत्साह व उल्लास का वातावरण प्रदान करते हैं। दीपावली सनातनी संस्कृति का एक नेतृत्व उत्सव है जो कि मात्र उत्सव ना होकर एक उत्सव माला है। प्रकाश व पटाखों से इस त्यौहार का सीधा संबंध है। इस अंक में आपको पटाखों और उससे संबंधित होने वाले परिवर्तनों के बारे में अवगत कराने का प्रयास करूंगा। जैसा की आपको विदित है कि वर्ष 2021 में दीपावली पर पटाखों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने इनको चलाने की समय सीमा का निर्धारण किया है। वजह यह रही थी कि पटाखों के कारण प्रदूषण का बड़ी मात्रा में होना पाया गया है। और भारत के बड़े शहरों में प्रदूषण बहुत तेजी से अपने पैर पसार रहा है। यह विदित है कि प्रदूषण फैलाने में पटाखो की भूमिका बहुत ज्यादा है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि लोग एक तय समय में एक ही स्थान पर बहुत ज्यादा पटाखे चलाते हैं। जिससे निकलने वाला धुआं सीधा हमारे शरीर के अंदर जाता है और जिसकी वजह से एक्यूट अस्थमा का अटैक भी हो सकता है। निमोनिया के मामले भी बढ़ सकते हैं। फेफड़ों से संबंधित गंभीर बीमारी भी हो सकती है और सांस लेने में तकलीफ होना एक आम सी बात हो जाती है। साथ ही साथ पर्यावरण प्रदूषण वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण भी बहुत तेजी से देखने में आता है। कोरोना वायरस महामारी के बाद तो बीमारियों से जूझ रहे कई लोगों की इम्युनिटी भी कम हो गई है। जिसके चलते प्रदूषण को नियंत्रित करना बहुत जरूरी हो गया है। पटाखों से निकलने वाले पार्टिकुलेट मैटर शरीर के अंदर चले जाते हैं और फेफड़ों में फंस जाते हैं। हार्ट की बीमारी या अस्थमा जैसी बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए यह बेहद जानलेवा हो सकता है। पटाखे जलाने से ज्यादा आबादी वाले शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ जाता है जिससे सर्दी के मौसम में एयर क्वालिटी इंडेक्स की मात्रा बहुत नीचे गिर जाती है या खराब स्थिति में आ जाती है। कोरोना वायरस महामारी के बीच पटाखे जलाना ज्यादा खतरनाक है क्योंकि प्रदूषण की वजह से इम्यूनिटी कमजोर होती है और लोगों को सांस लेने में दिक्कत का सामना करना पड़ता है।

केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड के 2015 के राष्ट्रीय गुणवत्ता सूचकांक के आंकड़ों के अनुसार हमारे देश में 8 राज्य दीपावली की रात होने वाली आतिशबाजी के कारण सबसे ज्यादा प्रदूषण से प्रभावित होते हैं। इन क्षेत्रों में वायु की गुणवत्ता काफी निचले स्तर पर पहुंच जाती है सिर्फदिल्ली में ही यह आंकड़ा पीएम 10 तक पहुंच जाता है। जो कि स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जो मानक तय किया गया है यह उससे लगभग 40 गुना कम है। अत: यह प्रदूषण स्तर काफी ज्यादा है।

अगर हम पटाखा उत्पादन की बात करें तो भारत का विश्व में पटाखा उत्पादन के क्षेत्र में दूसरा स्थान आता है। प्रथम स्थान पर चीन सबसे बड़ा पटाखों का उत्पादक है उत्पादक है। भारतीय पटाखा उत्पादन संस्थान अत्यधिक गुणवत्ता के साथ पटाखों का निर्माण करते हैं जो कि बाजार में चीनी पटाखे से ज्यादा पर्यावरण के समर्थक हैं। भारत में तमिलनाडु के शिवकाशी स्थान को पटाखा उत्पादन का गढ़ माना जाता है। और आपको यह जानकर बहुत हैरानी होगी कि

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
डिजिटल राजस्थान, समृद्ध राजस्थान
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

भारत में पटाखों का उत्पादन मुगलों के समय से पहले से ही किया जा रहा है। मुगलों के दौर में आतिशबाजी और पटाखे इस्तेमाल होते थेए वैसे तो गन पाउडर बाद में भारत आया है और इसके बाद पटाखों में गन पाउडर का इस्तेमाल होने लगा है। लेकिन अगर तथ्यों की बात करें तो यह भी पाया गया है कि भारत में प्राचीन काल से ही उत्सव के समय प्रकाश करके तथा कुछ आतिशबाजी करके दीपावली का त्यौहार मनाया जाता रहा है।

पटाखों से होने वाले प्रदूषण से बचने के लिए अब बाजार में ग्रीन पटाखे आ रहे हैं और इनका प्रचलन बाजार में होने लगा है। ग्रीन पटाखों से पर्यावरण का प्रदूषण एव अन्य तरह के प्रदूषण भी कम होते हैं। ग्रीन पटाखे सामान्य पटाखों से आकार में छोटे होते हैं और इन्हें बनाने में कच्चा माल भी कम इस्तेमाल होता है। इन पटाखों में पार्टिकुलेट मैटर का विशेष ध्यान रखा जाता है जिससे धमाके के बाद कम से कम प्रदूषण होता है। ग्रीन क्रैकर्स की संरचना इस प्रकार निर्धारित की जाती हैं कि इस से लगभग 20फीसदी पार्टिकुलेट मैटर निकलता है जबकि 10 फीसदी गैसे उत्सर्जित होती है। ग्रीन पटाखों के बॉक्स पर बने क्यूआर कोड को NEERI नाम के ऐप से स्कैन करके इनकी पहचान की जा सकती है। पटाखो को पूरी तरह प्रदूषण से मुक्त या प्रदूषण रहित तो नहीं बनाया जा सकता है लेकिन CSIR काउंसिल ऑफसाइंटिफिक्र एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च के वैज्ञानिकों ने पटाखों का ऐसा फार्मूला तैयार किया है जिससे ग्रीन पटाखों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इन पटाखों में धूल को सोखने की क्षमता है एव इनसे होने वाला उत्सर्जन स्तर भी काफी कम है। इन पटाखों का फार्मूला भी ऐसा होता है जिससे पानी के अणु उत्पन्न होते हैं जिससे धूल और खतरनाक तत्वों को कम करने में मदद मिलती है। ग्रीन पटाखे राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी संस्थान NEERI की खोज है और यह आवाज से लेकर दिखने तक में पारंपरिक पटाखों जैसे ही होते हैं। लेकिन इनको जलाने पर प्रदूषण बहुत कम होता है तथा सामान्य पटाखो की तुलना में 40 से 50 फीसदी तक कम हानिकारक गैस उत्सर्जित करते हैं। ग्रीन पटाखों में वायु प्रदूषण को बढ़ावा देने वाले हानिकारक रसायन नहीं होते हैं। इनमें एलुमिनियम, बेरियम, पोटेशियम नाइट्रेट और कार्बन का प्रयोग नहीं किया जाता है एवं अन्य रसायन भी काफी कम मात्रा में होते हैं जिससे प्रदूषण कम होता है। ग्रीन पटाखों में खतरनाक नाइट्रस ऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड के साथ ही अन्य छोटे.छोटे कणों के उत्सर्जन में भी 35फीसदी से 50फीसदी तक की लाई गई है।

ग्रीन पटाखों को मुख्यत: चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1 Safe Water Releaser : "पानी पैदा करने वाले पटाखे" यह पटाखा जलने के बाद पानी के कण पैदा करेंगे जिसमें सल्फर और नाइट्रोजन के कण घुल जाते है ।इन्हें सेफवाटर रिलीजर का नाम दिया है।

2 Star : सल्फर और नाइट्रोजन कम पैदा करने वाले पटाखे– इस तरह के पटाखे को स्टार क्रेकर का नाम दिया है। यानी सेफथमोई क्रेकर, इनमें ऑक्सिडाइजिंग एजेंट का उपयोग होता है जिससे जलने के बाद सल्फर और नाइट्रोजन कम मात्रा में पैदा होते हैं।

3 Safal : कम एलुमिनियम वाले पटाखे– इस पटाखे में सामान्य पटाखो की तुलना में 50 से 70प्रतिशत तक कम एलुमिनियम का इस्तेमाल होता है। इसे संस्थान ने सेफमिनिमल एलुमिनियम अर्थात Safal का नाम दिया है।

4. Aroma : अरोमा क्रेकर्स– इन पटाखों को जलाने से हानिकारक गैस कम पैदा होती है और बेहतर खुशबू भी बिखेरते हैं। ग्रीन पटाखों से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं तो हल होती ही हैं, वायु प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण भी काफी कम किया जा सकता है। यह आकार में थोड़े छोटे और कम आवाज करते हैं। ग्रीन पटाखों से अधिकतम 110 से 125 डेसीबल ध्वनि प्रदूषण होता है जबकि सामान्य पटाखों से एक से 170 से 190 डेसीबल तक ध्वनि प्रदूषण होता है।

ग्रीन पटाखो का निर्माण तकनीकी के क्षेत्र में भारत द्वारा उठाया गया एक नवाचारित कदम है एवं भारत में निर्मित ग्रीन पटाखे एक नई उपलब्धि की तरफइशारा करते हैं। और जिस तरह हमारे देश में विभिन्न उत्सवों और त्योहारों पर पटाखे चलाने की परंपरा है। इनकी सहायता से हम इसे बनाये रख सकते है। अत: यह ग्रीन पटाखे हमारे देश के विभिन्न राज्यों में पर्यावरण प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण को कम करने में बहुत ही कारगर व मददगार सिद्ध होंगे।

Ref: https://navbharattimes.indiatimes.com, www.bbc.com

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

किरकेट : आयो पछे न बैठो वचे

मनखां ज्यूं, खेलां रो बी टेम वियां करे। वणारो बी जलम न मरण वेवे। भरपूर जवानी रो वे बी मजो लेवे। फुटबाल, खो- खो, होकी न कबड्डी जस्या कतराई पुराणा खेल है। जणारो आज कोई भाव ई नी पूछे। कणी टेम पे अणारी घणी पूछ किरकेट आईन सबां रा पाट्या साफ करी दीदा। किरकेट रे धोवणे (बेट) सब खेलां ने अस्या धोया के बाकी कसर नी। यो खेल दूजा खेलां रे हामे पैदा वियो। देखता- देखता धीरे- धीरे आखा संसार में अणीरी धाक जमीगी। गरीब ऊं गरीब देसां रा नाना टाबर बी किरकेट रा सौकीन वेई गिया। भलेई वणाने कक्को केवळयो न ए फोर एप्पल नी आवे। पण वे बी फोर बॉल न सी फोर किरकेट अवस करीन जाणे। पेली गणती रा देसां खेलाड़ी किरकेट रमता हा। अबे तो पार ई कोई नी। जणी रे धके पड़े वोई बेट- बल्ला घुमाई रो है।

पेली पांच- पांच रा टेस्ट मैच वेवता हा। पचे आयो वन डे जणी में पचा ओववर रो मैच वेतो हो। अबे आई गियो टूंटी- टूंटी। मने लागे एक ओवर रो खेल बी छेटी नी है। मनखा ने असल मजो तो भारत न पाकिस्तान लारे रमे जदी आवे। टेम कठे है। झटपट खेलो न अळगा डगो। वाइरो आवा दो। टक टक रमवा रो जमानो नी है। चौका- छक्का जमावो तो इस मैदान में रेई सको। सेमी फाइनल वो के फाइनल, आपाणो देस जीते तो यूं लागे के मलक जीत्या। खेल तो खेल हैं, जणी में हार- जीत तो चालती रेवे। खेल ने दो देसां रो जुद्ध मानीन चलणो हाऊ नी है। खेलवा वाळा ने बी न देखवा वाळा ने बी अणी वात रो ध्यान राखणो चावे। खेल ऊं आपस रो परेम वद् नी के वैर। आपणो देस जीते तो भड़ीका वाजवा लागे। ये भड़की हगळी जीत पे फूटणा चावे। जीत तो जीत है, वा कदी बी फोरी मोटी नी वे।

किरकेट रा खेल में रिप्या री झमाझम वरखा वे। देखता- देखता खेलाड़ी करोड़ों रुपए में वातां करवा लागे। सिरकारी नौकरी मली जावे। जगा- जमीन व आदर भाव मलवा लागे। एक सीरीज पूरी वी के दूजी सरू। नेम झक नी मले।

खेलाड़ियां रे लारे नराई कामदार वे जो रिप्या ने होची हमजीन गते लगावे। रिप्या ने ठकाणे लगावणो कोई होरो काम नी है। म्हारे जस्या ने पूछो तो अणगणती रा रिप्या अवेरवाऊं तो वर्ल्ड कप जीतणों फेर बी हेल काम है।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ साहित्यकार
सरदारपुरा, उदयपुर
मो. 9001295523

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

मेवाड़ी जयवर्द्धन

NATHDWARA GROUP OF INSTITUTIONS

NATHDWARA Group of Institutions Estd.2010

(Approved by Government of Rajasthan, NCVT, AICTE, NCTE, QCI, New Delhi & Affiliated to MLSU, RTU, Kota, BTER, Jodhpur, Dr. Bhimrao Ambedkar Law University, Jaipur)

Upali oden, Nathdwara, Dist. Rajsamand (Raj.)
Contact : 94141-74064, 96368-15142, 95713-45111

Courses Offered

- ITI
- B.Sc. B.Ed. 4 Years Intergrated
- B.A. B. Ed. 4 Years Intergrated
- B. Tech
- B.Sc. PCM BCZ PCC
- BCA
- Diploma Electrical & Mechanical
- M.Sc. Physics Chemistry, Mathematics
- LL.B.

www.ngi.edu.in NGInathdwara nginathdwara NGI Nathdwara

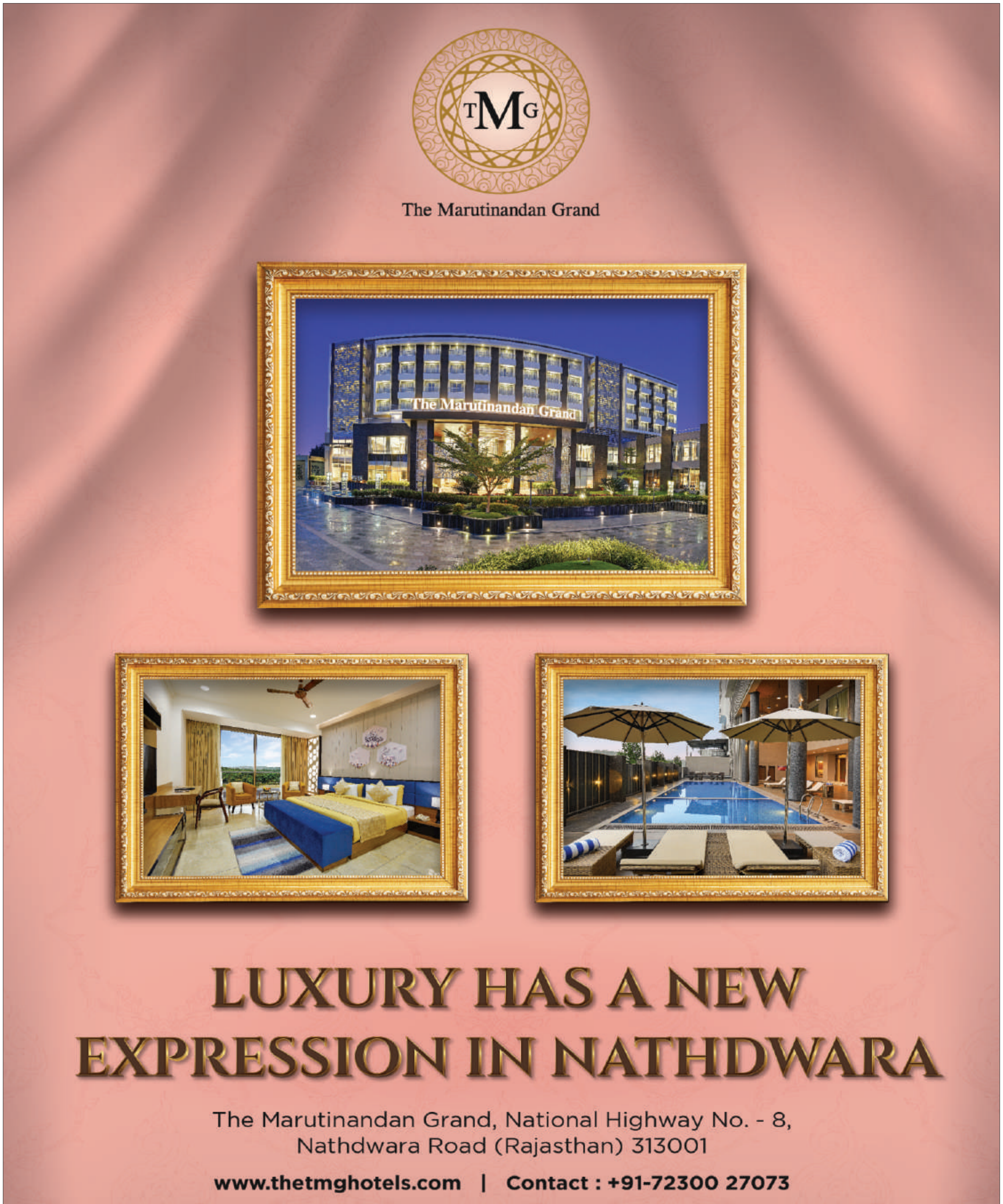

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews | jaivardhannews.com | liverajsamand | जयवर्द्धन